mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-192 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
14 जुलाई 2025 सोमवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

मंत्रालय ने विश्व...
@ पेज 7

राष्ट्रपति ने राज्यसभा के लिए 4 सदस्यों को नॉमिनेट किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राज्यसभा के लिए 4 सदस्यों को नॉमिनेट किया है। इनमें पूर्व सरकारी वकील और लोकसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार रहे उज्ज्वल निकम शामिल हैं। निकम, 26/11 के मुंबई हमला समेत कई हाई-प्रोफाइल मामलों में पब्लिक प्रॉसिक्यूटर रहे हैं। इनके अलावा, केरल के वरिष्ठ समाजसेवी और शिक्षाविद सी. सदानंदन मास्टर, भारत के पूर्व विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला और इतिहासकार एवं शिक्षाविद मीनाक्षी जैन भी राज्यसभा

जाएंगी। ये नियुक्तियां उन सीटों के लिए की गई हैं, जो पहले के नामित सदस्यों के सेवानिवृत्त होने से खाली हुई थीं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 80(3) के तहत, राष्ट्रपति को राज्यसभा में 12 सदस्यों को नॉमिनेट करने का अधिकार है। ये सदस्य कला, साहित्य, विज्ञान, सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में विशेष योगदान के लिए चुने जाते हैं। वर्तमान में राज्यसभा की कुल सदस्य संख्या 245 है, जिसमें 233 निर्वाचित और 12 नामांकित सदस्य शामिल हैं।

राज्यसभा संसद का उच्च सदन भारत की संसद में दो सदन होते हैं- लोकसभा और राज्यसभा। राज्यसभा संसद का उच्च सदन होता है। इसके सदस्यों का कार्यकाल 6 साल का होता है और हर 2 साल में एक तिहाई सदस्य रिटायर होते हैं।

आईआईएम कलकत्ता केस, पिता बोले- बेटी का रेप नहीं हुआ

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट परिसर में हुई रेप की घटना में नया खुलासा हुआ है। पीड़ित के पिता ने कहा कि मेरी बेटी का रेप नहीं हुआ है। वह तो ऑटो से गिरकर बेहोश हो गई थी। पिता का दावा है कि बेटी ने किसी के दबाव में शिकायत दर्ज कराई है।

वहीं, पुलिस ने घटना की जांच के लिए 9 सदस्यीय स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम बनाई है। घटना 11 जुलाई की है। पीड़ित की शिकायत के मुताबिक, वह पेशे से काउंसलर है। आरोपी ने उसे काउंसलिंग के लिए हॉस्टल बुलाया। वहां नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ रेप किया गया। पुलिस ने एमबीए लॉस्ट ईयर के छात्र महावीर टोप्पन्नावर उर्फ परमानंद जैन को अरेस्ट किया। उसे 19 जुलाई तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया गया। 1. पीड़ित बोली- पिज्जा खिलाया, फिर पानी पीते ही बेहोश हुई पीड़ित ने अपनी स्र्बुक्र में बताया कि वह काउंसलिंग के लिए हॉस्टल गई थी। सोशल मीडिया पर दोनों की जान-पहचान हुई थी। हॉस्टल पहुंचते ही आरोपी ने लंच में उसे पिज्जा ऑफर किया। फिर पानी पीते ही बेहोश हो गई। तब होश में आई तो पता चला कि मेरा रेप हुआ है।

राजा मर्डर-शिलॉन्ग जाने की तैयारी में मृतक के भाई विपिन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या का मोटिव अभी तक साफ नहीं हुआ है। राजा का परिवार शिलॉन्ग पुलिस की कार्रवाई से तो संतुष्ट है, लेकिन उन्हें मलाल इस बात का है कि राजा की हत्या की वजह क्या है, इसका पता नहीं चल सका है। राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा- जिस बिल्डिंग में सोनम रुकी थी, उसका ब्रोकर-कॉन्ट्रेक्टर शिलोम जेम्स अन्य आरोपियों से 100ल्न मिला है। उसके पास इतना पैसा कहां से आया, इसे लेकर जांच करानी चाहिए। 20 मई को राजा और सोनम हनीमून के लिए मेघालय के शिलॉन्ग गए थे, जहां 23 मई को सोनम ने राजा की हत्या करवा दी थी। 2 जून को राजा की लाश मिलने के बाद 9 जून को सोनम को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। तब से लेकर अब तक पुलिस सोनम को दो बार रिमांड पर लेकर पूछताछ कर चुकी है, अब वह जेल में है। विपिन ने कहा- शिलॉन्ग पुलिस ने जो कार्रवाई की, उससे परिवार पूरी तरह संतुष्ट है। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार भी कर लिया। हत्या में इस्तेमाल हथियार भी पुलिस को मिला, लेकिन अभी तक पुलिस ये नहीं बता पाई है कि आखिर राजा की हत्या की वजह क्या है? दो आरोपियों के जमानत की बात भी सामने आई है।

तमिलनाडु में मालगाड़ी पटरी से उतरी, 18 बोगियां जली

तिरुवल्लूर (एजेंसी)। तमिलनाडु के तिरुवल्लूर रेलवे स्टेशन के पास मनाली से जोलारपेट होते हुए कर्नाटक जा रही एक डीजल मालगाड़ी पटरी से उतर गई। इसके बाद उसमें आग लग गई। शुरुआत में पांच बोगियों में आग लगी। बाद में यह 18 बोगियां आग की चपेट में आ गईं। घटना रविवार सुबह 5.30 बजे हुई। मालगाड़ी में 52 बोगियां थीं।

जिला कलेक्टर एम प्रताप ने बताया कि 40 बोगियों को जलती हुई ट्रेन से अलग कर लिया गया है। वहीं, रेलवे स्टेशन के आसपास रहने वाले लोगों को निकालकर सुरक्षित जगह पहुंचाया गया। आग लगने का कारण अभी तक पता नहीं चल सका है। फायर ब्रिगेड की कई टीमें बुलाई गईं। दोपहर तक मिली जानकारी के मुताबिक 10 गाड़ियों की मदद से आग पर लगभग काबू पा लिया गया है। इधर, रेलवे और पुलिस घटना वाली जगह से 100 मीटर दूर पटरी पर मिली दरार की भी जांच कर रहे हैं।

अमरनाथ यात्रा-कुलगाम में काफिले की 3 बसें टकराईं, 10 घायल

पहलगाम (एजेंसी)। अमरनाथ यात्रा के काफिले की बसें वैष्णो देवी जा रही थीं, जब कुलगाम में हादसे का शिकार हो गईं। अमरनाथ यात्रियों के काफिले की 3 बसों की रविवार को कुलगाम में आपस में टक्कर हो गई। हादसे में 10 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। अधिकार ने बताया कि बालटाल की ओर जा रहे काफिले की तीन बसों की ताचलू क्रॉसिंग के पास एक्सीडेंट हुआ है। इधर, अमरनाथ यात्रा के 10वें दिन 19,020 श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा में हिम शिवलिंग के दर्शन किए। अब तक 1.83 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री पवित्र गुफा मंदिर में दर्शन कर चुके हैं। पवित्र अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई को शुरू हुई थी। यह 9 अगस्त तक चलेगी। इस बीच रविवार सुबह 7,049 यात्रियों का 12वां जत्था जम्मू से भगवती नगर बेस कैंप के लिए रवाना हुआ। इसमें 1,423 महिलाएं, 31 बच्चे और 136 साधु-साध्वियां शामिल हैं। यात्रा के पहले दिन गुरुवार को 12,348 , शुक्रवार को 14,515, शनिवार को 21,109, रविवार को 21,512 तीर्थयात्री, सोमवार को 23,857 तीर्थयात्री दर्शन के लिए पहुंचे थे। अब तक चार लाख से अधिक लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है।

महाराष्ट्र में शिवसेना कार्यकर्ताओं ने ऑटो ड्राइवर को पीटा

पालघर। ऑटो ड्राइवर को मराठी नहीं बोलने का वीडियो वायरल हुआ, जिसके बाद शिवसेना कार्यकर्ताओं ने उसे पीटा। महाराष्ट्र के पालघर में शिवसेना के कार्यकर्ताओं ने एक ऑटो ड्राइवर की पिटाई कर दी। दरअसल, ऑटो ड्राइवर का एक वीडियो वायरल हुआ था। इसमें वह चिल्लाते हुए कह रहा है कि हिंदी और भोजपुरी में बोलूंगा, क्या करोगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का दुबई में अभूतपूर्व स्वागत

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार को दुबई पहुंचे। डॉ. यादव का भारतीय समुदाय के नागरिकों और उद्योगपतियों ने गर्मजोशी से अभूतपूर्व स्वागत किया। दुबई में मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मालवा क्षेत्र के पुराने साथी भी मिले, जिनसे मिलकर वे भावुक हो गए। ताज होटल में भारतीय समुदाय ने पलक-पांवड़े बिछाकर उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के आत्मीय और सरल व्यवहार ने सभी मेजबानों का दिल छू लिया। आत्मीय स्वागत से अभिभूत मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने लिखा, दुबई में भारतीयों ने अपनी मेहनत, संस्कृति और संस्कारों से विशेष पहचान बनाई है। यूएई प्रवास के दौरान दुबई स्थित ताज होटल में भारतीय भाई-बहनों

और युवाओं से भेंट कर हृदय आनंदित है। सभी की आत्मीयता के लिए हार्दिक आभार! उन्होंने अपनी यात्रा की कुछ तस्वीरें भी साझा कीं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 19 जुलाई तक दुबई और स्पेन की यात्रा पर रहेंगे। इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य मध्यप्रदेश में वैश्विक निवेश को आकर्षित करना, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देना और रोजगार के नए अवसरों का सृजन करना है। यह दौरा प्रदेश को वैश्विक मंच पर एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। मुख्यमंत्री की यह विदेश यात्रा न केवल प्रदेश के आर्थिक विकास को गति देगी, बल्कि रोजगार सृजन, तकनीकी उन्नयन और सांस्कृतिक प्रचार के माध्यम से मध्यप्रदेश को दीर्घकालिक लाभ भी पहुंचाएगी।

ओडिशा सेक्सुअल हैरेसमेंट केस, पीड़ित 95 प्रतिशत झुलसी

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के सीएम ने रविवार को भुवनेश्वर एम्स पहुंचकर आग लगाकर सुसाइड की कोशिश करने वाली फकीर मोहन कॉलेज की छात्रा से मुलाकात की। वो 90-95 फीसदी झुलसी है। वो आईसीयू वार्ड में वेंटिलेटर पर है। सीएम मोहन चरण माझी ने कहा- अगले 24 घंटे बहुत अहम हैं। दिल्ली एम्स के डॉक्टरों से भी मीटिंग की है। जरूरत पढ़ने पर छात्रा को एयरलिफ्ट किया जाएगा। इलाज का पूरा खर्चा सरकार उठाएगी। राष्ट्रीय महिला आयोग ने ओडिशा डीजीपी को मामले में खिलाफ सख्त एक्शन लेने का निर्देश दिया है।

बिहार की तरह पूरे देश में वोटर लिस्ट जांची जाएंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग बिहार के बाद अब पूरे देश में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन कराने जा रहा है। इसके तहत वोटर लिस्ट की गहनता से जांच की जाती है और अपडेट किया जाता है। अगस्त से इसकी शुरुआत हो सकती है। ईसी ने सभी राज्यों में अपनी चुनाव मशीनरी एक्टिव कर दी है। आयोग का ये फैसला सुप्रीम कोर्ट के 10 जुलाई को बिहार में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन को जारी रखने की परमिशन पर आया। कोर्ट ने इसे

संवैधानिक बताया था। हालांकि कई विपक्षी दल और लोग इस रिवीजन के खिलाफ हैं। एससी में चुनौती भी दी है। दावा है कि स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन के चलते योग्य नागरिक अपने मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। चुनाव आयोग के अधिकारी के मुताबिक, इलेक्शन अथॉरिटी 28 जुलाई के बाद एफआईआर पर अंतिम फैसला लेगी क्योंकि बिहार स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन के मामले में सुप्रीम कोर्ट में दोबारा सुनवाई होनी है।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- एक्सपर्ट बोले-पायलटों को जल्दबाजी में दोषी बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। एविएशन एक्सपर्ट सनत कौल ने एअर इंडिया फ्लाइट एआई 171 की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि यह रिपोर्ट ठीक नहीं लग रही है। इसमें जरूरी हस्ताक्षर भी नहीं हैं, जबकि यह जरूरी होता है। कौल का कहना है कि इस जांच टीम में ऐसे पायलट को शामिल किया जाना चाहिए, जिसे बोइंग 787 या कम से कम 737 विमान की पूरी समझ हो। उन्होंने यह भी जोर दिया कि अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन की गाइडलाइंस, 13 के अनुसार जांच होनी चाहिए। इसमें अनुभवी पायलट को भी शामिल करना चाहिए। सरकार ने बताया कि यह जांच आईसीएओ के नियमों और 2017 के विमान दुर्घटना जांच नियमों के तहत हो रही है। इसकी अध्यक्षता गृह सचिव कर रहे हैं, जिसमें कई बड़े अधिकारी शामिल हैं। दरअसल, 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी। पायलट संघ ने भी जांच की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए इससे पहले फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स और एयरलाइन पायलट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने भी रिपोर्ट पर सवाल उठाए थे।

करणी सेना पर दो दिन में तीन बार लाठीचार्ज

हरदा (एजेंसी)। हरदा में चक्काजाम कर रहे करणी सेना परिवार के कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने दो दिन में तीन बार लाठीचार्ज किया। रविवार सुबह भी पुलिस ने उन्हें समझाइश दी, नहीं मानने पर आंसू गैस के गोले छोड़े। लाठीचार्ज कर खदेड़ा। वाटर कैनन चलाकर भी प्रदर्शनकारियों को कंट्रोल किया। प्रदर्शन में शामिल करणी सेना परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन सिंह शेरपुर समेत 50 लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जिला जेल में भेजा है। यहां तनाव के चलते यहां हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, सीहोर, देवास और खंडवा जिले का पुलिस फोर्स तैनात है। प्रदेश में रतलाम, देवास, धार समेत अन्य शहरों में भी करणी सेना ने प्रदर्शन किया।

कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि कार्यकर्ताओं को जाम खत्म करने की समझाइश दी जा रही थी, नहीं मानने पर रविवार सुबह वाटर कैनन चलाया गया।

कोटा में उपराष्ट्रपति बोले- कोचिंग सेंटर कल्चर खतरनाक

कोटा (एजेंसी)। कोटा में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा- कोचिंग सेंटर कल्चर राष्ट्रीय एजुकेशन पॉलिसी के बिल्कुल खिलाफ है। यह कल्चर बहुत ज्यादा खतरनाक है। कोचिंग सेंटर राष्ट्रीय शिक्षा नीति को फॉलो नहीं कर रहे। ये उच्च दबाव के क्षेत्र में है, जो बच्चों के विकास में रुकावट पैदा करते हैं। विशेषकर कोटा का युवा यहां के कोचिंग सेंटर की वजह से आगे की ओर देखने में असमर्थ है। रानपुर स्थित ट्रिपल आईटी के चौथे दीक्षांत समारोह में शनिवार को उपराष्ट्रपति ने कहा- मैं आश्वस्त हूं कि यह हमेशा के लिए नहीं है।

समय बदलेगा और बड़ी संख्या में लोगों के माइंडसेट को बदलने का काम करेगा। उपराष्ट्रपति ने कहा- राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर भी यहां बैठे हैं। मैं कहना चाहूंगा कि स्कूल-कॉलेज में स्टूडेंट्स की संख्या ज्यादा बढ़े, ऐसी पॉलिसी पर विचार करना चाहिए। धनखड़ ने शिक्षा को फैक्ट्री की तरह संचालित करने की प्रवृत्ति का विरोध करते हुए कहा- हमें इस असेंबली-लाइन संस्कृति को समाप्त करना होगा, क्योंकि यह हमारी शिक्षा के लिए खतरनाक है। यह विकास और प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। उन्होंने कोचिंग सेंटरों की ओर से विज्ञापनों पर भारी खर्च की आलोचना करते हुए कहा- विज्ञापन और होर्डिंग्स पर भारी पैसा बहाया जाता है। यह पैसा उन छात्रों से आता है, जो कर्ज लेकर या बड़ी कठिनाई से अपनी पढ़ाई का खर्च उठाते हैं। यह पैसे का उपयुक्त उपयोग नहीं है। ये विज्ञापन भले ही आकर्षक लगे, पर हमारी आत्मा के लिए आंखों की किरकिरी बन गए हैं। हम गुरुकुल की बात कैसे न करें? हमारे संविधान की 22 दृश्य-प्रतिमाओं में एक गुरुकुल की छवि भी है।

पंजाब में मजीठिया ने बैरक बदलवाने की याचिका दी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। आय से अधिक संपत्ति मामले में शिरोमणि अकाली दल के नेता और पूर्व मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया न्यू नाभा जेल में बंद हैं। लेकिन अब उन्होंने मोहाली की अदालत में एक याचिका दायर की है। यह याचिका उन्होंने जेल में अपनी बैरक बदलवाने के लिए लगाई है। मजीठिया का कहना है कि वह पूर्व मंत्री और विधायक रह चुके हैं और उन्हें ऑरेंज कैटेगरी में रखा जाना चाहिए। इसलिए उन्हें उन कैदियों से अलग रखा जाए जो अंडर ट्रायल हैं या जिन्हें सजा हो चुकी है। अदालत ने इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सरकार को नोटिस भेजा है और अगली सुनवाई सोमवार को तय की है। फिलहाल मजीठिया 19 जुलाई तक न्यायिक हिरासत में रहेंगे।

अरुणाचल में रेप-छेड़छाड़ के आरोपी को भीड़ ने मार डाला

ईटानगर (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश की लोअर दिबांग घाटी में 11 जुलाई को असम के युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना के बाद रोइंग कस्बे में कर्फ्यू लगाया गया है। युवक पर हॉस्टल में रह रहीं नाबालिग लड़कियों के रेप और यौन शोषण का आरोप था।

पीड़ित परिवारों की शिकायत पर युवक को पुलिस ने हिरासत में लिया था। जब बात इलाके में फैली तो सैकड़ों लोगों की भीड़ थाने गई। युवक को बाहर घसीटकर लाई और पुलिसकर्मियों के सामने ही पीटा।

पुलिस गंभीर घायल आरोपी रियाज उल कुरीम को अस्पताल लेकर पहुंची। वहां दोबारा उसे पीटा गया।

जिसके चलते उसकी मौत हो गई। कुरीम बोंगाईगांव का रहने वाला था।

पुलिस ने बताया कि आरोपी छात्रावास के पास एक कंस्ट्रक्शन साइट पर काम करता था। आरोप है कि उसने छात्रावास में नाबालिग लड़कियों के साथ गलत काम किया। लड़कियों की तबीयत बिगड़ने पर मामले का खुलासा हुआ। 6-9 साल की 8 लड़कियों का मेडिकल कराया गया है।

कोटा में ट्रक में घुसी मिनी बस, 4 की मौत

कोटा (एजेंसी)। सगाई फंक्शन से लौट रही मिनी बस (ट्रैवलर) आगे चल रहे ट्रक में घुस गई। इस हादसे में 2 सगे ज्वेलर भाई, उनकी मां और बहनोई (बहन के पति) की मौत हो गई। परिवार के 10 अन्य लोग घायल हैं। इसमें से 7 की स्थिति गंभीर है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर दुर्घटना रविवार सुबह कोटा (ग्रामीण) के दीगोद उपखंड इलाके में सुबह करीब 5 बजे हुई। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया- शनिवार को करौली के सीताबाड़ी इलाके की रहने वाली ज्वेलर फैमिली इंदौर (मध्य

प्रदेश) गई थी। इंदौर में लड़के का सगाई-गोदभराई कार्यक्रम था। शनिवार को ही रात के नौ बजे परिवार के सभी लोग मिनी बस से करौली के लिए चले थे। रविवार सुबह दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के चंबल पुल पर (बुढ़ादीत गांव) दुर्घटना हो गई। हादसा देखकर लगता है कि मिनी बस की स्पीड काफी तेज थी। आशंका जताई जा रही है कि मिनी बस के ड्राइवर को झपकी आने के कारण हादसा हुआ है। मिनी बस में सवार सुरेश सोनी (45), और अनिल सोनी (48) की मौत हो गई।

मध्यप्रदेश फिर होगा गौरवान्वित मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल ,एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वच्छता सर्वेक्षण पुरस्कार में मध्यप्रदेश एक बार फिर से गौरवान्वित होगा। उन्होंने बताया कि आगामी 17 जुलाई को राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा मध्यप्रदेश के आठ शहरों को स्वच्छता की विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने इस उपलब्धि पर सभी स्वच्छता कर्मी, नगरीय निकायों के महापौर, अध्यक्ष, पार्षद, अधिकारी और कर्मचारियों सहित नागरिकों को बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि इंदौर शहर को स्वच्छता के लिए सुपर स्वच्छ श्रेणी लीग में आठवीं बार सम्मानित किया जाएगा। इंदौर पूर्व में सात बार देश के स्वच्छतम शहर का पुरस्कार प्राप्त कर चुका है। विगत वर्षों में श्रेष्ठ प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर स्वच्छ लीग पुरस्कार इस वर्ष इंदौर को दिया जाएगा। उज्जैन को 3 से 10 लाख जनसंख्या वाले शहरों की श्रेणी में स्वच्छ लीग पुरस्कार प्राप्त होगा, जो गर्व का विषय है। इसी प्रकार 20 हजार से कम आबादी वाले नगरों की श्रेणी में बुधनी नगर को भी सम्मानित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजधानी भोपाल प्राकृतिक सुंदरता के अलावा स्वच्छता के क्षेत्र में भी आदर्श बना है और इस आधार पर देश की सर्वश्रेष्ठ राजधानी के रूप में सम्मानित होगा। विभिन्न श्रेणियों में ग्वालियर, देवास, शाहगंज और जबलपुर भी पुरस्कृत किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता का जो संकल्प लिया है, उसमें मध्यप्रदेश कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। उन्होंने प्रदेशवासियों का आह्वान किया कि स्वच्छता सर्वेक्षण के इस मापदंड के आधार पर अपने घर, मोहल्ले, कॉलोनी और नगर को स्वच्छ रखें और इस आदर्श जीवन शैली को दुनिया के बीच प्रदर्शित करने का प्रयास करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को नई दिल्ली से दुबई रवाना होने से पहले यह संदेश प्रदेशवासियों के नाम जारी किया।

मंत्रालय वल्लभ भवन क्रमांक-1 के रेनोवेशन संबंधी हुई बैठक

भोपाल ,एजेंसी। मंत्रालय वल्लभ भवन क्रमांक-1 के रेनोवेशन संबंधी बैठक अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री संजय कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में हुई। वर्तमान में इस भवन में मुख्यमंत्री कार्यालय, मुख्य सचिव कार्यालय सहित 19 विभाग कार्य कर रहे हैं। बैठक में विभागों के स्थान परिवर्तन पर विचार-विमर्श किया गया। जीर्णोधार एवं उन्नयन में अग्निशमन, विद्युत, लिफ्ट, शौचालय, एयर कंडीशन, फर्नीचर की व्यवस्था एवं उच्च गुणवत्ता का ध्यान रखे जाने पर बल दिया गया। बैठक में संबंधित विभागों के अपर सचिव, उपसचिव सहित कार्यपालन यंत्री, उपस्थित थे।

ट्रांसफार्मर उठाकर घर ले जाने वाले आरोपी के विरुद्ध एफआईआर दर्ज

भोपाल ,एजेंसी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा भिंड वृत्त के असवार विद्युत वितरण केन्द्र अंतर्गत शासकीय कार्य में बाधा डालने वाले आरोपित के विरूद्ध एफ.आई.आर. दर्ज कराई गई है। सहायक प्रबन्धक विद्युत वितरण केन्द्र असवार श्री अभिषेक सोनी ने रावतपुरा थाना जिला भिंड में आवेदन देकर बताया कि आरोपी श्रीराम बिहारी निवासी रावतपुरा शासकीय कार्य में बाधा डालते हुए बिजली विभाग का ट्रांन्सफार्मर घर उठा ले गए, जो कि विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 136 के अन्तर्गत अपराध की श्रेणी में आता है। अपराध पंजीबद्ध कर रावतपुरा पुलिस ने विवेचना शुरू कर दी है। प्रबंधक श्री अभिषेक सोनी ने बताया कि ग्राम रावतपुरा के श्रीराम बिहारी त्रिपाठी को शासकीय योजना अनुदान के अन्तर्गत 25 के.वी. का ट्रांन्सफार्मर स्थापित कर वितरण केन्द्र असवार से अस्थाई कृषि पम्प कनेक्शन दिया गया था।

इस योजना के अन्तर्गत प्रदाय ट्रांन्सफार्मर पूर्णत: मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी की संपत्ति है। आरोपी के ऊपर वर्तमान में एक लाख 49 हजार 795 रूपये बिजली बिल बकाया है।

निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयसीमा सुनिश्चित करें : लोक निर्माण मंत्री

भोपाल ,एजेंसी। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार, सागर में लोक निर्माण विभाग की संभाग स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में सागर संभाग में संचालित 20 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाले सड़क, पुल और भवन निर्माण कार्यों की प्रगति की गहन समीक्षा की गई। मंत्री श्री सिंह ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी निर्माणाधीन कार्य निर्धारित समयसीमा में और उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण किए जाएं। उन्होंने कहा कि लोक निर्माण से लोक कल्याण की भावना के अनुरूप जनहित को प्राथमिकता देते हुए निर्माण कार्यों का क्रियान्वयन किया जाए। समीक्षा बैठक में 48 निर्माण कार्यों पर चर्चा हुई, जिनमें 7 सड़क निर्माण, 25 भवन निर्माण, 10 पुल निर्माण, 5 राष्ट्रीय राजमार्ग एवं 1 राज्य राजमार्ग से संबंधित कार्य सम्मिलित थे। मंत्री श्री सिंह ने विलंबित कार्यों की प्रगति पर चिंता व्यक्त करते हुए उनकी साप्ताहिक मॉनिटरिंग के निर्देश दिए। प्रत्येक कार्य की समय-सीमा तय कर उसकी सतत समीक्षा करने के लिए भी निर्देशित किया गया।

बैठक के दौरान यह तथ्य सामने आया कि कई कार्यों की समय-सीमा बढ़ाने के बावजूद भी उनके समय पर पूर्ण होने की संभावना कम है। इस पर मंत्री श्री सिंह ने प्रमुख अभियंता को निर्देशित किया कि ऐसे सभी प्रकरणों की गहन समीक्षा कर रिवाइज्ड वर्कप्लान बनवाया जाए और निर्धारित अवधि में कार्य पूर्ण किया जाए। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि लोक निर्माण विभाग प्रदेश की आधारभूत संरचना निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इसकी जिम्मेदारी है कि सभी विकास कार्य गुणवत्ता और गति के साथ पूरे किए जाएं, जिससे जनता को शीघ्र लाभ मिल सके। समीक्षा बैठक से पूर्व मंत्री राकेश सिंह ने सागर में दो बड़ी परियोजनाओं का लोकार्पण एवं भूमि पूजन किया।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि सड़क निर्माण में एक मीटर व्यास का पेड़ शिफ्ट किया जाएगा, उसे काटा नहीं जाएगा। लोक निर्माण विभाग लोक कल्याण सरोवर बनाने का कार्य करेगा। सड़कों के गड्ढे की शिकायत एक सप्ताह में दूर की जाएगी, नहीं तो संबंधित अधिकारी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।लोक निर्माण मंत्री श्री सिंह ने कहा कि सागर का विकास और तेज गति से शुरू होगा। उन्होंने कहा कि लोक कल्याण के लिए मध्य प्रदेश की सरकार मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में कार्य कर रही है और सभी का समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि विभाग के द्वारा सभी सड़कों का कार्य गुणवत्ता के साथ किया जा रहा है। नई सड़कों के लिए गिट्टी-मुरम की खुदाई कलेक्टर की विशेष अनुमति से ही की जाएगी और ऐसी खुदाई की जाएगी जिससे लोक कल्याण सरोवर तैयार हो सके। इस प्रकार के सरोवर तालाब के रूप में कार्य करेंगे।

इसके अलावा, विभाग द्वारा सभी सड़कों की एक किलोमीटर की दूरी पर रिचार्ज बोर बनाए जाएंगे।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 -मध्यप्रदेश के शहरों को राष्ट्रीय स्तर पर मिलेगा सम्मान

भोपाल ,एजेंसी। केन्द्र सरकार द्वारा शनिवार वर्ष 2024 के स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। इन सम्मानों में स्वच्छता लीग सम्मान, राष्ट्रपति सम्मान, देश और राज्यों की विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले निकायों को सम्मानित किया जाएगा। इसके लिये 17 जुलाई को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में एक गरिमामय आयोजन होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू करेंगी।

हर वर्ष की तरह मध्यप्रदेश ने इस वर्ष भी अपनी विजय पताका फहराई है। प्रदेश के आठ शहरों को इस राष्ट्रीय आयोजन में सम्मानित किया जाएगा। इसमें सुपर लीग श्रेणी में इंदौर, उज्जैन और बुधनी हैं। इस श्रेणी में सिर्फ वे शहर शामिल किए जाते हैं, जिन्होंने पिछले तीन सालों में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया हो और उत्तरोत्तर प्रगति की संभावनाएं सृजित की हों।

इसी प्रकार राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त करने वाले शहरों में भोपाल, देवास और शाहगंज शामिल हैं। इसके अलावा आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा प्रदेश के जबलपुर और ग्वालियर को उनके उल्लेखनीय

प्रयासों के लिये सम्मानित किया जाएगा। कचरा मुक्त शहरों की स्टार रेटिंग और ओडीएफ/ वॉटर प्लस के परिणाम भी उसी दिन जारी किए जाएंगे।

प्रदेश से इस आयोजन में विभागीय मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के साथ विभागीय अधिकारी, जनप्रतिनिधियों की बड़ी टीम इस आयोजन में शिरकत करेगी।

मध्यप्रदेश में चल रहा है निवेशकों का यज्ञ : मुयमंत्री डॉ. यादव

भोपाल ,एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में निवेशकों का यज्ञ चल रहा है, जिसमें बड़े पैमाने पर निवेशकों से समर्थन मिल रहा है। प्रदेश सरकार आकर्षक औद्योगिक और निवेश नीतियों के माध्यम से निवेश आकर्षित करने का निरंतर प्रयास कर रही है। विगत एक वर्ष में प्रदेश के संभागों में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और देश के प्रमुख औद्योगिक नगरों में रोड-शो आयोजित किए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को नई दिल्ली से दुबई रवाना होने से पहले अपने संदेश में यह बात कही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में फरवरी माह में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया गया था, जिसमें 30 लाख करोड़ का निवेश प्राप्त हुआ था। निवेश आकर्षित करने का यह सिलसिला लगातार जारी है। हाल ही में सूरत, लुधियाना और जोधपुर में भी सफल रोड-शो का आयोजन किया गया है। इसी क्रम में विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से 13 से 19 जुलाई के बीच दुबई और स्पेन की यात्रा की जा रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की समृद्धि बढ़ाने और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह दौरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस यात्रा के पहले वे प्रदेशवासियों को आश्वस्त करना चाहते हैं कि मध्यप्रदेश सरकार सभी वर्गों महिला, युवा, किसान और गरीब के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में इसी प्रकार से काम करती रहेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि दुबई और स्पेन की यात्रा के माध्यम से विदेशी निवेशकों को प्रदेश में निवेश संभावनाओं और आकर्षक निवेश नीतियों से अवगत कराया जाएगा। इस यात्रा के दौरान दुबई और स्पेन के निवेशकों के बीच राज्य की औद्योगिक निवेश के संबंध में ब्रांडिंग की जाएगी, जिससे मध्यप्रदेश विदेशी निवेश में शीर्ष राज्य बने।

प्रदेश में सभी प्रकार के उद्योग, भारी उद्योग, मध्यम, लघु और सूक्ष्म उद्यम, आईटी सहित पर्यटन, वन, खनन, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। साथ ही प्रदेश के विभिन्न अंचलों जैसे चंबल, महाकौशल, विंध्य, मालवा और बुंदेलखंड अंचल की विशेषताओं के आधार पर अनुकूल प्लानिंग के साथ विदेशी सरकारों के सौजन्य से विदेशी निवेशकों से चर्चा की जाएगी।

भारतीय भाषा में अध्यापन के केंद्र बनेंगे विश्वविद्यालय-मंत्री परमार

भोपाल ,एजेंसी। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में शनिवार को, सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल के सभाकक्ष में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा विभाग अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा शीर्ष समिति की बैठक हुई। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा कर, अध्यादेश 14(1) एवं अध्यादेश 14(2) के परिप्रेक्ष्य में प्रदेश के 10 संभागों में समयपूर्वक कार्यशालाओं के आयोजन कर व्यापक रूप से विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों तक लागू अध्यादेशों से अवगत कराने के निर्देश दिए। श्री परमार ने विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों के लिए कार्यशालाओं के आयोजन भी समयपूर्वक सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। श्री परमार ने प्रदेश के समस्त भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ प्रभारियों को लेकर भी कार्यशाला आयोजित करने को कहा। श्री परमार ने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में अध्यापन के लिए कार्ययोजना बनाई जाए और इसे विद्यार्थियों के मूल्यांकन क्रेडिट से भी जोड़ा जाए। श्री परमार ने कहा कि विश्वविद्यालयों को भारतीय भाषा में अध्यापन का केंद्र बनाने के लिए कार्य करें। मंत्री श्री परमार ने कहा कि ज्ञान बोध प्रतियोगिता में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पारंपरिक विषयों में भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित प्रश्नावली का समावेश करें ताकि विद्यार्थियों को भारतीय दृष्टि के साथ समाज में विद्यमान परंपरागत ज्ञान के अध्ययन एवं शोध का अवसर मिले।

मंत्री सारंग ने नरेला विधानसभा में विभिन्न विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

भोपाल ,एजेंसी। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि विकास सतत प्रक्रिया है, जो समय और नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर चलती रहती है। यही कारण है कि नरेला विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक वार्ड, कॉलोनी और मोहल्ले में निरंतर विकास कार्य किए जा रहे हैं, जिससे यहाँ के नागरिकों को बेहतर जीवन, आधारभूत सुविधाएँ और स्वच्छ पर्यावरण मिल सके।

मंत्री श्री सारंग ने शनिवार को नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड-39 के ऐशबाग स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में विभिन्न विकास कार्यों का

भूमि-पूजन किया। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि वर्ष 2008 के पहले नरेला विधानसभा में पक्की सड़कों का अभाव था, नालियां नहीं थीं और पीने के पानी के लिए नागरिकों को टैंकरों पर निर्भर रहना पड़ता था। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नरेला क्षेत्र की हर सड़क पक्की हो चुकी है। कॉलोनियों का समुचित ड्रेनेज सिस्टम विकसित किया गया है और नालों का व्यवस्थित चैनलाइजेशन कर जल-भराव की समस्या को पूरी तरह समाप्त किया गया है।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में 'विकास' ही हमारा ध्येय है। चाहे वह सड़क हो, सीवेज हो, जल-प्रबंधन हो या सामुदायिक सुविधाएँ, हर क्षेत्र में समर्पित भाव से कार्य किया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, वरिष्ठजन, समाजसेवी एवं पार्षद उपस्थित रहे।

एक बगिया मां के नाम परियोजना अंतर्गत मनरेगा का राज्य स्तरीय प्रशिक्षण

भोपाल ,एजेंसी। मध्यप्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद द्वारा एक बगिया मां के नाम'' परियोजना के क्रियान्वयन को लेकर शनिवार को भोपाल में राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के सभी 313 जनपद पंचायत के अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी, 52 जिलों परियोजना अधिकारी मनरेगा एवं ग्रामीण आजीविका के डीपीएम शामिल हुए। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी सभागार, विकास भवन अरेरा हिल्स, भोपाल में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयुक्त मनरेगा-संचालक वाटर शेड मिशन श्री अवि प्रसाद एवं आयुक्त एसआरएलएम श्रीमती हर्षिका सिंह ने अधिकारियों को एक

बगिया मां के नाम'' परियोजना के बारे में जानकारी दी और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। प्रशिक्षण के दौरान अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी, परियोजना अधिकारी एवं डीपीएम एसआरएलएम को संयुक्त रूप से पारदर्शिता के साथ एक बगिया मां के नाम परियोजना के लिए हितग्राहियों का चयन, परियोजना के उद्देश्य और लाभ के बारे में जानकारी दी। साथ ही अधिकारियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया और उनके सुझाव भी प्राप्त किए गए।

राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मनरेगा परिषद द्वारा तैयार कराए गए एक बगिया मां के नाम'' प्रोग्राम बैनर का मनरेगा आयुक्त श्री अवि प्रसाद एवं आयुक्त श्रीमती हर्षिका सिंह ने विमोचन किया।

एक बगिया मां के नाम परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए राज्य स्तर पर अब तक 2100 से अधिक इंजीनियर एवं 600 से अधिक कृषि सखी को तकनीकी रूप से प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इसमें कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री और उपयंत्री (आरईएस एवं मनरेगा), डीपीएम एसआरएलएम शामिल है।

सुपोषित मध्यप्रदेश' की दिशा में मजबूत क़दम-मंत्री भूरिया

भोपाल ,एजेंसी। गुजरात के केवड़िया में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, केन्द्र सरकार द्वारा आयोजित जोनल सम्मेलन में महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने राज्य में चल रहे योजनाओं, नवाचारों और ज़मीनी पहल का प्रभावशाली विवरण प्रस्तुत किया। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि मध्यप्रदेश, अपनी जनजातीय बहुलता और भौगोलिक विविधता के बावजूद, महिलाओं और बच्चों के संपूर्ण सशक्तिकरण के लिये निरंतर प्रयासरत है। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं की ऑनलाइन नियुक्ति प्रक्रिया शुरू की गई है, जिससे लगभग 19,500 पदों की पारदर्शी तरीके से पूर्ति हो रही है। यह प्रक्रिया हर छह माह में रिक्तियों के अनुसार नियमित रूप से संचालित की जाएगी। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री भूरिया ने बताया कि,ढ्ढढ्ढस्र भोपाल के सहयोग से पोषण ट्रैकर डेटा की गुणवत्ता में सुधार किया गया है ।कार्यकर्ताओं के लिए नेत्र परीक्षण अभियान भी चलाया जा रहा है जिससे स्मार्टफोन आधारित ऐप संचालन में उन्हें सुविधा मिले ।उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि झाबुआ जिले में मोटी आई कार्यक्रम और डिण्डौरी जिले में रेवा प्रोजेक्ट जैसे नवाचारों के माध्यम से कुपोषण उन्मूलन में अद्भुत परिणाम मिल रहे हैं। सशक्त वाहिनी कार्यक्रम के तहत अब तक 11,000 से अधिक बालिकाओं को नि:शुल्क शारीरिक और शैक्षणिक प्रशिक्षण दिया गया है। कई बालिकाएं आज पुलिस, चिकित्सा एवं अन्य सेवाओं में चयनित होकर सेवा दे रही हैं। हेल्पलाइन 181 और 1098 का श्वक्रस्स्-112 से तकनीकी एकीकरण जुलाई 2024 में सफलतापूर्वक किया गया।

कूनो नेशनल पार्क में मादा चीता नभा की हुई मृत्यु

भोपाल ,एजेंसी। श्योपुर जिले के कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया से लायी गयी 8 वर्षीय मादा चीता नभा की मृत्यु हो गई। मादा चीता नभा शिकार के प्रयास के दौरान घायल हुई थी। उसे अन्य चोटों के साथ दोनो बायें, आगे एवं पिछले पैरों में फ्रेक्चर पाया गया। एक सप्ताह से उसका इलाज चल रहा था। इलाज के दौरान आज उसकी मृत्यु हो गई। पीएम रिपोर्ट आने के बाद वस्तु-स्थिति पता लगेगी। क्षेत्र संचालक चीता परियोजना ने बताया कि कूनो में अब 26 चीते हैं। इनमें 9 वयस्क (6 मादा, 3 नर) और 17 भारत में जन्में शावक हैं, सभी स्वस्थ हैं।

राज्यमंत्री आज सतना आयेंगी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी 14 जुलाई को प्रातः 6.30 बजे रेवांचल एक्सप्रेस से सतना आयेंगी।

सतना जिले में अब तक 413.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले में इस वर्ष 1 जून से 13 जुलाई तक 413.5 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 553.1 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 334.5 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 456.7 मि.मी, बिरसिंहपुर में 247.3 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 388.4 मि.मी., नागौद में 540.4 मि.मी., जसो (नागौद) में 160 मि.मी. एवं उचेहरा में 627.5 मि.मी. औसत वर्षा अब तक दर्ज की जा चुकी है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। विगत वर्ष इस अवधि तक जिले में औसत वर्षा 168.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की जा चुकी थी।

मैहर जिले में अब तक 418.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर जिले में इस वर्ष 1 जून से 13 जुलाई 2025 तक 418.8 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख मैहर से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की अमरपाटन तहसील में 473 मि.मी., मैहर में 331.3 मि.मी. एवं रामनगर में 452.2 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 919.7 मि.मी. है। गत वर्ष इस अवधि में 256 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

युवा संगम मेला 16 को सतना में एवं 17 जुलाई को मैहर में

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला प्रशासन, शासकीय आईटीआई सतना एवं जिला रोजगार कार्यालय सतना के सहयोग से सतना एवं मैहर जिले में एक दिवसीय युवा संगम मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि सतना जिले के शासकीय आईटीआई कॉलेज परिसर में 16 जुलाई को एवं मैहर जिले के शासकीय आईटीआई कॉलेज परिसर सरला नगर रोड मैहर में 17 जुलाई को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक युवा संगम मेले का आयोजन किया जा रहा है। रोजगार मेले में चैतन्य फयनेंस, संजीव मोटर्स आमधने प्रा.लि., धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड, प्राकृतशील एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड, एमआरएफ, इनफिनिटी कैरियर सोल्यूशन, देवा इंटरप्राइजेज, मदरशन सूमि, एसआईएस सिक्योरिटी चित्रकूट, ए एण्ड टी कन्स्ट्रक्शन, सिटी कार्स सतना, टाटा ऑटो कैम्प कैट, बोस्च कैट, महीन्द्रा सीआईई कैट, सैन्यूमिरो निर्मन कैट में पद के लिए शैक्षणिक योग्यता 10वीं, 12वीं आईटीआई, डिप्लोमा, ग्रेजुएशन उत्तीर्ण बेरोजगार आवेदक अपने मूल रिकार्ड के साथ निर्धारित स्थान पर उपस्थित होकर रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

मासिक किश्त के साथ 250 रूपये राखी का शगुन पाकर खुश है-सुधा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।सतना जिले में रहने वाली श्रीमती सुधा विश्वकर्मा को मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की सभी किश्तें समय पर मिल रही हैं। 12 जुलाई को योजना की 26वीं किश्त के साथ 250 रूपये राखी का सगुन सहित कुल 1500 रूपये पाकर सुधा विश्वकर्मा बेहद खुश और उत्साहित नजर आई। सुधा का कहना है कि मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना का लाभ मिलने से अब उनकी आर्थिक तंगी दूर हो गई है। अपना और बच्चों का खर्च पूरा करने के अलावा वे घर चलाने में भी योजना की राशि का उपयोग कर रही है। सुधा ने बताया कि आने वाले रक्षाबंधन त्यौहार को लेकर अब उन्हें कोई चिंता नहीं है। क्योंकि मुख्यमंत्री मोहन भइया ने पहले से ही त्यौहार के खर्च का इंतजाम कर दिया है।

भारी बारिश के बाद बाढ़ की स्थिति सामान्य होने पर भी सक्रिय रही नगर निगम की टीम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर भारी बारिश के बाद बाढ़ की स्थिति सामान्य होने के बावजूद नगर निगम की टीम लगातार सक्रिय रही। बाढ़ राहत शिविरों के 6 केंद्रों में नगर निगम की टीम द्वारा लगातार राहत व बचाव कार्य किए जा रहे हैं। निगमायुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे के निर्देश पर दिनांक 13 जुलाई को राहत शिविरों में ठहरे लोगों के लिए तथा बिछिया नदी के आसपास, निपानिया एवं खैरी बस्ती के बाढ़ प्रभावित रहवासियों को सुबह नाश्ता एवं दोपहर में भोजन के 600 पैकेट वितरित किए गए।

साथ ही शहर के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में वर्षा का पानी कम होने के बाद लगातार कीटनाशक का छिड़काव किया जा रहा है, ताकि बारिश के मौसम में फैलने वाली बीमारियों से नागरिकों को सुरक्षित रखा जा सके एवं मच्छरों के लार्वा नष्ट कर डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों को रोका जा सके। नगर निगम स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण के लिए लगातार प्रयासरत है। इसके अतिरिक्त, नगर निगम का बाढ़ राहत कंट्रोल रूम निरंतर सक्रिय है, जहां नगरवासियों की शिकायतों को संज्ञान में लेकर अधिकारियों द्वारा जल निकासी एवं राहत कार्य सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

अब तक कंट्रोल रूम में 104 शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं, जिनमें नगर निगम की टीम रसिया मोहल्ला, कैलाशपुरी, वार्ड 40, वार्ड 26, वार्ड 10 एवं अन्य क्षेत्रों में जेसीबी के माध्यम से जल निकासी का कार्य लगातार कर रही है। निगमायुक्त ने बताया कि नगर निगम के सभी विभाग निर्माण, राजस्व, जल प्रदाय एवं स्वच्छता की टीमें लगातार कार्यरत हैं एवं नागरिकों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कर रही हैं।

जि.पं.स संजय सिंह ने बड़े देव बाबा मंदिर मे किया पौधरोपण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह ने पर्यावरण सरंक्षण और हरियाली अभियान को बढ़ावा देते हुए रविवार को बड़े देव बाबा मंदिर प्रांगण में पौधरोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने 8 पौधे लगाए, जिनमें से एक पौधा "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान को समर्पित किया गया।

यह कार्यक्रम स्वर्गीय विधायक प्रेम सिंह की स्मृति को समर्पित रहा। कार्यक्रम की शुरुआत संजय सिंह द्वारा बड़े देव बाबा के दर्शन और आशीर्वाद लेने से हुई। इसके पश्चात उन्होंने महंत भागवत भास्कर डॉ. विपिनकृष्ण महाराज से आशीर्वाद प्राप्त कर पौधरोपण कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत की।

पौधों की सुरक्षा के प्रति गंभीरता दिखाते हुए संजय सिंह ने हर पौधे के लिए ट्री गार्ड भी लगाए। कार्यक्रम में विशेष रूप से बरौधा सरपंच प्रतिनिधि राजेंद्र चौरसिया, भरत पाल और सचिन सिंह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

गौरतलब है कि संजय सिंह पहले से ही पर्यावरण जागरूकता को लेकर सतत रूप से कार्य कर रहे हैं और "हरियाली क्रांति" के तहत कई जगहों पर पौधरोपण कर चुके हैं। उनका उद्देश्य हर गांव-शहर को हरित बनाना और लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना है।

भाई की प्रेरणा से भाई ने किया पहली बार ब्लड डोनेट

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना एक ओर जहां भ्रांतियां के कारण लोग रक्तदान करने से बचते फिरते हैं वहीं दूसरी और ऐसे भाई हैं जो भाई की सेवा को देखते हुए स्वयं भी मानवता की सेवा करने के लिए उत्साह और खुशी के साथ रक्तदान कर रहे हैं

समाजसेवी अमन अग्रवाल के भाई अक्षत अग्रवाल जी ने पहली बार रक्तदान कर पुनीत कार्य किया

उल्लेखनीय है युवा समाजसेवी एवं सिन्धु विकास समिति के अध्यक्ष विनोद गेलानी स्वयं 70 बार रक्तदान करते हुए युवाओं एवं मातृशक्ति को निरंतर रक्तदान करने के लिए प्रेरित करते हे। श्री गेलानी की प्रेरणा से प्रेरित होकर हजारों रक्तदाताओं ने रक्त दान कर मानवता की सेवा की है

रक्तदान करवाने अमन अग्रवाल जी एवं आकाश बनर्जी जी का विशेष सहयोग रहा मीडिया प्रभारी अमित कामरानी ने बताया संस्था पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा कर रही है एवं अभी तक 6647 यूनिट रक्तदान करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है अग्रवाल जी के रक्तदान करने पर संस्था के संरक्षक श्री गोपी गेलानी श्रीचंद मनवानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी ज्ञान खटवानी इंद्रलाल आडवाणी श्रीचंद शीतलानी घनश्याम मंघरानी संजय वाधवानी महेश रावलानी गंगाराम सचदेव दिलीप सोनी अमित कामरानी रंजीत सेनानी जितेंद्र गावरी गोपीचंद कापड़ी विजय जग्यासी अशोक चांदवानी बसंत खत्री दीपक वाधवानी केशव मखीजा राजेश कोटवानी राजकुमार साधवानी मनीष टेकवानी पंकज आहूजा मनीष सदानी बंटी भोजवानी मनोज सुखदानी सहयोगी आकाश बनर्जी मनमोहन माहेश्वरी विभाग बनर्जी आशीष मोगिया बसंत शर्मा निक्की मनचंदानी विशाल राजपाल संजय आहूजा बंसी नागदेव महिला मंडल से मोना चोपड़ा राखी होतचंदानी डॉ. मनीषा सोई डॉक्टर विद्या पांडे,आर्य खिलवानी मुस्कान चंदानी सिमरन होतचंदानी निशा गोयल आभा सिंह जया जायसवाल रशिम जैन प्रेरणा जादवानी अनामिका सोनी ने अग्रवाल जी को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

जिला चिकित्सालय में नवीन मेटरनिटीविंग कक्ष का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने जिला चिकित्सालय रीवा के नवीन मेटरनिटीविंग कक्ष का शुभारंभ किया। उन्होंने मेटरनिटीविंग के बन जाने से मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। इस अवसर पर बताया गया कि नवीन मेटरनिटीविंग में प्रसूति एवं स्त्री रोग से संबंधित मरीजों को पृथक से ओपीडी की सुविधा के साथ जांच के लिए सेम्पल प्राप्त करने हेतु व्यवस्था सुनिश्चित कराई गई। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला चिकित्सालय के 100 बिस्तर के अतिरिक्त भवन के बन जाने से मरीजों को और सुविधा मिलेगी साथ ही इसमें मेटरनिटीविंग के लिए भी स्थान आरक्षित रहेगा।

उप मुख्यमंत्री ने जिला चिकित्सालय के विस्तार भवन का अवलोकन किया तथा शेष कार्य को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। इस दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव शुक्ल सहित चिकित्सक उपस्थित रहे।

ई अटेंडेंस सहित जवा के अध्यापकों के संविलियन को लेकर शिक्षकों में आक्रोश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आजाद अध्यापक शिक्षक संघ मध्यप्रदेश के प्रांतीय कार्यकारिणी एवं प्रांताध्यक्ष भरत पटेल के आह्वान पर पूरे प्रदेश सहित रीवा जिले में भी 13 जुलाई को अपनी मांगों के समर्थन में विवेकानंद पार्क से कलेक्ट्रेड कार्यालय तक शिक्षक स्वाभिमान रैली निकाल कर जिला कलेक्टर रीवा को ज्ञापन सौंपा गया।उक्ताशय की जानकारी देते हुए संघ के मीडिया प्रभारी पुष्पेन्द्र द्विवेदी ने बताया कि अध्यापक शिक्षक संवर्ग निम्नलिखित लंबित मांगों शिक्षकों को दोषपूर्ण ई अटेंडेंस व्यवस्था लागू न की जावे । जिन जिलों में यह व्यवस्था लागू की गई है उसे तत्काल समाप्त कर जो अटेंडेंस व्यवस्थाएप्रथम नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना करके पुरानी पेंशन देनेएआई एफएम एस पोर्टल में शिक्षकों की जो नियुक्ति दिनांक 01.07.2018 दर्ज है।

उसे सुधार कर उनकी प्रथम नियुक्ति दिनांक अंकित की जावेए गुरूजियो को उनकी नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता दिलाए जानेएजवा के 338 सहायक अध्यापकों का राज्य शिक्षा सेवा में लंबित संविलियन कराए जाने सहित 13 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन जिला अध्यक्ष रमेश प्रताप सिंह ने सौंपा।उक्त कार्यक्रम में संभागीय अध्यक्ष चक्रपाणि सिंहएप्रांतीय उपाध्यक्ष राजेश सिंहएबालेंदुशेशर द्विवेदीए स्वतंत्र प्रकाश चतुर्वेदीएलोली तिवारीएविष्णुकांत तिवारीएसंजय सिंहएसंजीव दुबेएके के मिश्राएअर्जुन सिंह बघेलएरजनीश तिवारीएरूपेश्वर पाण्डेयएसुरेंद्र सिंहएरमेश कुमार मिश्राएरजनीश चतुर्वेदीएपुष्पेन्द्र द्विवेदीएमनीष चंदाननएप्रमोद चतुर्वेदीए वीणा सिंहएअनिरुद्ध सिंहएरामायण पाण्डेयएदूधनाथ प्रजापतिएमहेंद्र सिंहएराजकुमार उपाध्यायएधर्मराज सिंहएरघुवंश मणि पाण्डेयएचिंतामणि कोलएमंगला शुक्लाएसरोज सिंहएमनोरमा शर्माएब्रह्मी प्रसाद चतुर्वेदीएसुधा तिवारीएमहेंद्र कुमार पटेलए धीरेश दुबेएपुष्पराज गिरिए अजयभान सिंह आदि उपस्थित रहे।

रीवा विधानसभा क्षेत्र के बीएलओ का प्रशिक्षण आज

रीवा. भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार बूथ लेवल आफीसर्स बीएलओ को मतदाता सूची पुनरीक्षण तथा अन्य निर्वाचन गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस संबंध में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी तथा एसडीएम हुजूर वैशाली जैन ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र रीवा के बीएलओ का प्रशिक्षण 14 से 16 जुलाई तक आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण प्रतिदिन सुबह 10.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय के सभागार में आयोजित किया जा रहा है। बीएलओ को जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा नियुक्त मास्टर ट्रेनर्स द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण देने के लिए मास्टर ट्रेनर के रूप में एसएल मण्डलोई प्राध्यापक, डॉ हुलास पेण्ड्रो सहायक प्राध्यापक तथा डॉ जितेन्द्र कुमार पाण्डेय सहायक प्राध्यापक को तैनात किया गया है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बूथ क्रमांक एक से बूथ क्रमांक 100 तक के बीएलओ का प्रशिक्षण 14 जुलाई तथा बूथ क्रमांक 101 से 200 तक का प्रशिक्षण 15 जुलाई को आयोजित किया जा रहा है।

उप मुख्यमंत्री ने हेल्थ केयर सेंटर का किया शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने ग्राम शाहपुर हिनौता में माँ भगवती हेल्थ केयर सेंटर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हम स्वस्थ्य रहेंगे तभी हर तरह का विकास सार्थक होगा। हेल्थ केयर सेंटर आसपास के पूरे क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य की जांच और उपचार की अच्छी सुविधा देगा। कई बार समय पर जांच होने से रोग का उपचार तत्काल शुरू हो जाता है। समय पर उपचार से कैंसर का रोग भी साध्य हो जाता है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य सुविधाओं का तेजी से विस्तार हुआ है। रीवा में सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में कई गंभीर रोगों का सफलतापूर्वक उपचार किया जा रहा है।

भरहुत नगर सतना में आयोजित हुआ स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सफाई अपनाओ बीमारी भगाओ अभियान के तहत नगर पालिक निगम सतना के तत्वावधान में भरहुत नगर सतना में इंजी.धर्मेंद्र सिंह द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके माध्यम से स्वच्छता जागरूकता,मतदाता जागरूकता, नशा मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज एवं अपराध मुक्त समाज का संदेश देने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में अशोक कुमार शुक्ला,ओम प्रकाश, देवेश यादव,राज सिंह,आस्था ताम्रकार, प्रिया सेन, शालिनी सिंह, गुनगुन कोरी,आस्था कोरी,प्रीती साकेत,आकाश बर्मन, अभिषेक पटेल, उमंग विश्वकर्मा ,रजनीश चौधरी ,अभिषेक पटेल ,संदीप सिंह, सत्यम सिंह, मनोज कुमार राजपूत, अमन कुशवाहा आदि अनेक लोगों ने भाग लिया!

धर्मेंद्र सिंह ने सफाई अपना कर बीमारी भगाने के इस अभियान में सभी से बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने का अनुरोध किया तथा उन्होंने स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और "स्वच्छता ही सेवा है" के नारे को बुलंद किया! सभी ने स्वच्छता शपथ एवं मतदाता शपथ ली तथा नशा मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज एवं अपराध मुक्त समाज के दिशा में प्रयास करने का भी सभी ने संकल्प लिया।

मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना के तहत आवेदन 25 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना के तहत व्यावसायिक शिक्षण देने हेतु आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। विपत्तिग्रस्त महिलायें जिनके परिवार में कोई नहीं हो, बलात्कार से पीड़ित महिला या बालिका, दुव्यापार से बचाई गयी महिलायें जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती हो, ऐसिड विक्टिम/दहेज प्रताड़ित/अग्नि पीडित महिलायें, कुआरी मातायें या समाजिक कुप्रथा का शिकार महिलायें, जेल से रिहा महिलायें, परित्यक्ता/तलाकशुदा महिलायें जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती हो, आश्रय गृह, बालिका गृह, अनुरक्षण गृह में निवासरत विपत्तिग्रस्त बालिका / महिला जो प्रशिक्षण लेना चाहती हों आवेदन कर सकती हैं। प्रशिक्षण पर होने वाला संपूर्ण व्यय विभाग द्वारा वहन किया जायेगा। हितग्राहियों का चयन जिला स्तर पर गठित समिति द्वारा किया जायेगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि 25 जुलाई तय की गयी है। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास नयन सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण हेतु महिला मानसिक रूप से विक्षिप्त न हो, सामान्य वर्ग की महिला की उम्र 45 वर्ष से अधिक न हो परित्यक्ता तलाकशुदा / विधवा, अनुसूचित जाति/जनजाति, पिछड़ा वर्ग महिला होने की स्थिति मे 50 वर्ष, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अनुसार न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता होनी अनिवार्य होगी।

चयनित विपत्तिग्रस्त महिलाओं को संचालनालय महिला एवं बाल विकास द्वारा निर्धारित विभिन्न विषयों पर मान्यता प्राप्त संस्थाओ में प्रशिक्षण दिलाया जायेगा। आवेदन पत्र प्राप्त करनें एवं अधिक कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग नवीन कलेक्ट्रेट भवन, प्रथम तल कक्ष कमांक 4 से प्राप्त की जा सकती है।

विचार

पूरी दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ रही है मुस्लिम आबादी

अक्सर कहा जाता है कि भारत में मुस्लिमों की जनसंख्या में तेज वृद्धि हो रही है लेकिन अब जो आंकड़े सामने आये हैं वह दर्शा रहे हैं कि पूरी दुनिया में मुस्लिम आबादी में सबसे तेज वृद्धि हो रही है। आंकड़े यह भी बता रहे हैं कि अगर यही रुझान जारी रहे तो 2050 तक मुस्लिम और ईसाई आबादी लगभग बराबर हो सकती है और 2070 के बाद मुस्लिम जनसंख्या ईसाइयों से आगे निकल सकती है। यह परिवर्तन न केवल सांख्यिकीय रूप से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से भी पूरे विश्व को प्रभावित करेगा। रिपोर्ट कहती है कि 2010 से 2020 के बीच मुस्लिमों की संख्या 347 मिलियन (34.7 करोड़) बढ़ी, जोकि अन्य सभी धर्मों की सम्मिलित वृद्धि से भी अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक मुस्लिम जनसंख्या का प्रतिशत 23.9 प्रतिशत से बढ़कर 25.6 प्रतिशत हो गया। यह वृद्धि मुख्य रूप से युवा आबादी और उच्च प्रजनन दर के कारण हुई। रिपोर्ट कहती है कि 2010 में ईसाई वैश्विक आबादी का 30.6त्न थे, जो 2020 में घटकर 28.8 प्रतिशत रह गए। इस गिरावट का मुख्य कारण था धार्मिक त्याग, जिसमें खासतौर पर लोग पश्चिमी देशों में ईसाई धर्म को छोड़ रहे हैं। वहीं रिपोर्ट कहती है कि वैश्विक हिंदू आबादी लगभग 1.2 अरब हो गई है (2010 में 1.1 अरब थी), यानी 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हालांकि हिंदुओं का वैश्विक प्रतिशत 15 प्रतिशत से मामूली घटकर 14.9त्न हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, हिंदुओं की प्रजनन दर वैश्विक औसत के अनुरूप है और धर्मांतरण की दर भी बहुत कम है। रिपोर्ट के मुताबिक 2020 तक दुनिया के 95त्न हिंदू भारत में रहते हैं। इसके अलावा, 'नो-रिलिजन' वर्ग में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। धार्मिक रूप से असंलग्न लोगों की संख्या 270 मिलियन बढ़कर 1.9 अरब हो गई है और इनका वैश्विक हिस्सा 23.3त्न से बढ़कर 24.2त्न हो गया है। वहीं प्रमुख धर्मों में केवल बौद्ध धर्म की आबादी 2010 की तुलना में 2020 में कम रही। 2010 में बौद्ध वैश्विक जनसंख्या का 4.9त्न थे, पर 2020 में यह घट गया। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में हिंदुओं की आबादी 2010 के 80 प्रतिशत से घटकर 2020 में 79 प्रतिशत हो गई है। वहीं भारत में मुस्लिम आबादी 2010 के 14.3त्न से बढ़कर 2020 में 15.2 प्रतिशत हो गई है। यह वृद्धि भी मुख्य रूप से प्रजनन दर और युवा जनसंख्या के कारण है, न कि धर्मांतरण से। हालांकि भारत में मुस्लिमों की यह वृद्धि अन्य दक्षिण एशियाई देशों जैसे पाकिस्तान या बांग्लादेश की तुलना में धीमी है, पर फिर भी यह एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय परिवर्तन है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2010 में दुनिया की कुल मुस्लिम आबादी में से 35त्न मुसलमान 15 वर्ष से कम आयु के थे। उल्लेखनीय है कि इतनी युवा जनसंख्या होने के कारण जन्म दर अधिक बनी रहती है, जिससे आबादी तेजी से बढ़ती है। साथ ही मुस्लिम महिलाओं की औसत प्रजनन दर अन्य धार्मिक समुदायों की तुलना में अधिक है। इससे मुस्लिम जनसंख्या की प्राकृतिक विकास दर भी अधिक होती है। साथ ही, रिपोर्ट कहती है कि मुस्लिमों में धर्म छोड़ने वालों की संख्या और अन्य धर्मों से इस्लाम अपनाने वालों की संख्या लगभग बराबर है। यानी धार्मिक स्विचिंग का असर नगण्य है, जिससे शुद्ध जनसंख्या वृद्धि केवल जन्म के कारण होती है। इसके अलावा, रिपोर्ट के मुताबिक केवल 1त्न वयस्क ही अपने जन्मजात धर्म से अलग होकर अन्य धर्म अपनाते हैं, विशेष रूप से हिंदू और मुसलमान, इन दोनों समुदायों में धर्म-परिवर्तन की दर अत्यंत कम है।

बहरहाल यह रिपोर्ट दर्शाती है कि आने वाले दशकों में विश्व की धार्मिक जनसंख्या संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल सकते हैं क्योंकि मुस्लिम आबादी में तेज़ वृद्धि जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा, ईसाई समुदाय के समक्ष चुनौतियाँ बढ़ेंगी, खासकर यूरोप और अमेरिका में। रिपोर्ट के मुताबिक हिंदू समुदाय वैश्विक रूप से स्थिर रहेगा, परंतु भारत के भीतर उसके अनुपात में धीरे-धीरे गिरावट संभव है। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह रिपोर्ट न केवल जनसांख्यिकी विश्लेषण, बल्कि नीति-निर्धारण, शिक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण और धार्मिक सहिष्णुता के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पंजाबी अखबारों की रायः पंजाब में तेजी से बिगड़ रही कानून-व्यवस्था

डॉ. आशीष वशिष्ठ

पंजाब में तेजी से बिगड़ती कानून-व्यवस्था, महाराष्ट्र में उद्धव और राज ठाकरे का गठबंधन और बिहार में चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण और उस पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों पर इस हते पंजाबी अखबारों ने अपनी राय प्रमुखता से रखी है। सूबे की कानून व्यवस्था पर चंडीगढ़ से प्रकाशित पंजाबी ट्रिब्यून अपने संपादकीय पंजाब में बढ़ता अपराध में लिखता है- अबोहर के व्यापारी संजय वर्मा की दिनदहाड़े हत्या और मोगा के एक लीनिक में अभिनेत्री तानिया के पिता की गोली मारकर हत्या ने एक तरह से यह उजागर कर दिया है कि किस तरह संगठित अपराध राज्य में आपराधिक गतिविधियों को आसानी से अंजाम दे रहा है। अखबार लिखता है शिक्षित युवाओं में बेरोज़गारी, नशे की लत व जल्दी पैसे कमाने का लालच कई पंजाबी युवाओं को अपराध की ओर धकेल रहा है।

सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार और गैंगस्टरों का महिमामंडन आग में घी डालने का काम कर रहा है। पंजाब में आपराधिक-आतंकवादी गठजोड़ अब स्थानीय नहीं रहा; यह अंतर्राष्ट्रीय, तकनीकी रूप से सक्षम और वैचारिक रूप से अस्थिर हो गया है। यह संकट जितना लंबा चलेगा, पंजाब के भविष्य को पटरी पर लाना उतना ही मुश्किल होता जाएगा।

जालंधर से प्रकाशित %पंजाबी जागरण% लिखता है- पंजाब पिछले कुछ समय से आपराधिक गतिविधियों में बढ़ोतरी के कारण सुर्खियों में है। अबोहर में हुई एक घटना ने पूरे राज्य में सनसनी फैला दी है। लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से जुड़े एक समूह ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के ज़रिए इस घटना की जिम्मेदारी ली है। ऐसा नहीं है कि राज्य में इस तरह की यह पहली घटना है। यह घटना आम बात है। अबोहर की घटना ने पंजाब में जबरन वसूली के बढ़ते मामलों पर भी प्रकाश डाला है।

जालंधर से प्रकाशित अजीत लिखता है- आजकल पूरे राज्य में लूटपाट का बोलबाला है। अबोहर की घटना के बाद सरकार एक बार फिर विपक्षी दलों के निशाने पर आ गई है। विपक्ष खासकर कांग्रेस ने मुख्यमंत्री से विधानसभा में कानून व्यवस्था के मुद्दे पर विशेष बहस की मांग की है। जालंधर से प्रकाशित रोजाना पंजाब टाइम्स लिखता है- वर्ष 2023-24 की रिपोर्टों के अनुसार, पंजाब में जबरन वसूली और धमकियों से जुड़े मामलों में वृद्धि देखी गई है। पंजाब पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, जून 2022 से फरवरी 2023 तक जबरन वसूली और धमकी के 278 मामले दर्ज किए गए, जो मार्च 2023 से दिसंबर 2023 तक बढ़कर 307 हो गए। यह वृद्धि समाज और पुलिस प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती पेश कर रही है। अखबार लिखता है, सिद्धू मूसेवाला की हत्या ने संगठित अपराध की गंभीरता को उजागर किया, लेकिन इसके ख़िलाफ़ कोई बड़ी कार्रवाई नहीं हुई। जबरन वसूली की घटनाओं ने पंजाब के व्यापारियों और छोटे उद्योगपतियों में भय का माहौल पैदा कर दिया है। कई व्यापारी और कलाकार धमकियों के कारण अपना व्यवसाय या पेशा छोड़ने की सोच रहे हैं। इसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

चंडीगढ़ से प्रकाशित रोजाना स्पोक्समैन लिखता है, इस साल अब तक चंडीगढ़ में हत्या के 15 मामले दर्ज किए गए हैं। आंकड़े बताते हैं कि तेजी से हो रहे शहरीकरण, अन्य कारकों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश और बिहार से पंजाब और चंडीगढ़ की ओर युवा पीढ़ी के बढ़ते पलायन के कारण भी गंभीर और घातक अपराधों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। जिन व्यवसायों में स्थानीय लोगों की विशेषज्ञता है, उनमें बाहरी लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने जैसी मांगें राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर उठने लगी हैं। पंजाब और चंडीगढ़ को भी अब इस दिशा में कुछ सार्थक कदम उठाने की ज़रूरत है।

बिहार में चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण और इस बाबत सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्देशों पर चंडीगढ़ से प्रकाशित %पंजाबी ट्रिब्यून% लिखता है- सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को बिहार में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को जारी रखने की अनुमति दे दी है, लेकिन साथ ही उसने चुनाव आयोग से एक बहुत ही प्रासंगिक प्रश्न पूछा है- अभी क्यों? अदालत ने यह बिल्कुल सही बात कही है कि विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले इस तरह की कवायद से लोगों के मन में संदेह पैदा होना स्वाभाविक है। सुप्रीम कोर्ट ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया है कि इस प्रक्रिया में आधार कार्ड पर विचार क्यों नहीं किया जा रहा है। उसका मानना है कि चुनाव अधिकारियों को आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड पर विचार करना चाहिए। चंडीगढ़ से प्रकाशित %देशसेवक% लिखता है- छोटी-मोटी बाधाओं के बावजूद, चुनाव आयोग ने न केवल देश में, बल्कि दुनिया में भी सम्मान अर्जित किया है। बिहार चुनावों में चुनाव आयोग के सामने अपनी ईमानदारी बचाने की चुनौती है।

जालंधर से प्रकाशित अज दी आवाज लिखता है- बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार चुनाव जीतने के लिए हर हथकंडा अपना रहे हैं। बिहार में कानून-व्यवस्था की स्थिति ठीक नहीं है। रसूखदारों और कारोबारियों की हत्याओं की घटनाओं ने राज्य सरकार की छवि को गहरा धक्का पहुंचाया है। युवा बेरोजगार हैं और आम जनता महंगाई की मार झेल रही है। ऐसे में नीतीश कुमार ने भी अन्य राजनेताओं की तरह चुनाव के दौरान जनता को लुभाने के लिए बड़े-बड़े ऐलान किए हैं। अखबार आगे लिखता है, बिहार सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत के लिए चुना गया समय उसकी ईमानदारी पर सवाल उठा रहा है। अगर सरकार वाकई लोगों की समस्याओं के प्रति गंभीर और सजग होती, तो ये घोषणाएं एक-दो साल पहले ही की जा सकती थीं। यह तो समय ही बताएगा कि सरकार के अंतिम दिनों में मतदाताओं को लुभाने के लिए की गई घोषणाएं कारगर साबित होती हैं या नहीं।

महाराष्ट्र में उद्धव और राज ठाकरे के गठबंधन पर जालंधर से प्रकाशित %अज दी आवाज% लिखता है- मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार द्वारा राज्य में हिंदी को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाने के फैसले ने दोनों चचेरे भाइयों, उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे को करीब आने का अवसर दिया। ऐसा लगता है मानो दोनों नेता साथ आने के मौके का इंतज़ार कर रहे थे। फिलहाल, ये दोनों पार्टियां अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रही हैं। ठाकरे भाइयों का तात्कालिक लक्ष्य प्रतिष्ठित मुंबई नगर निगम में पैर जमाना है। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ गठबंधन महायुति और विपक्षी एमवीए दोनों ही आंतरिक मतभेदों से घिरे हुए हैं। राज्य में स्थानीय निकाय चुनावों के मद्देनजर, आगामी समय में महाराष्ट्र की राजनीति में और अधिक उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे और उनका प्रदर्शन राजनीति में उनका भविष्य भी तय करेगा। इसके अलावा एक बड़ा सवाल यह भी है कि क्या ये दोनों स्थानीय चुनाव अकेले लड़ेंगे या एमवीए के सहयोगी कांग्रेस और शरद पवार के साथ मिलकर लड़ेंगे।

चंडीगढ़ से प्रकाशित %पंजाबी ट्रिब्यून% लिखता है- शिवसेना के एक धड़े के प्रमुख उद्धव ठाकरे और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे द्वारा हताशा में अपनाया गया यह अंतिम उपाय है। शिवसेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे के बेटे उद्धव और भतीजे राज ठाकरे अपनी राजनीतिक किस्मत चमकाने के लिए %मराठी मानुष% कार्ड पर भरोसा कर रहे हैं। वे भाजपा पर किसी न किसी बहाने महाराष्ट्र के लोगों को बांटने का आरोप लगा रहे हैं; हालांकि, उनकी लड़ाई केवल भगवा पार्टी के खिलाफ ही नहीं है, बल्कि उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली %आधिकारिक% शिवसेना के खिलाफ भी है। ठाकरे बंधुओं के पुनर्मिलन का मतलब है कि शिंदे अब मराठी वोट को हल्के में नहीं ले सकते।

बिहार चुनावों में महिलाओं पर दांव के निहितार्थ

ललित गर्ग

बिहार में इस साल अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग ने अभी तक मतदान की तारीखों की घोषणा नहीं की है, लेकिन राज्य में राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई है। विभिन्न राजनीतिक दल लुभावनी घोषणाएं कर रहे हैं, नये-नये मुद्दों को उछाला जा रहा है। गोपाल खेमका हत्याकांड हो या तंत्र मंत्र के चलते एक ही परिवार के पांच लोगों को जला देने की त्रासद घटना- नीतीश कुमार पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान पर संदेह के सवालों के साथ मुखर विपक्षी दल इसके खिलाफ राजनीतिक लड़ाई के साथ ही कानून विकल्पों पर भी गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इस बीच, एनडीए की सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने एनडीए से दूरी बनाते हुए बिहार की सभी 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का संकेत देकर सियासी परिदृश्य को दिलचस्प बना दिया है। इन्हीं परिदृश्यों के बीच बिहार सरकार ने सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के फैसला लेकर चुनावी सरगर्मियों को एक नया मोड़ दे दिया है। बिहार सरकार का यह निर्णय केवल एक चुनावी रणनीति भर नहीं, बल्कि एक गहरे सामाजिक परिवर्तन का संकेतक भी है। तय है कि इस बार के बिहार चुनाव के काफी दिलचस्प एवं हंगामेदार होंगे।

सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण के गहरे निहितार्थ हैं। एनडीए की नीतिश सरकार ने स्थानीय महिलाओं को प्राथमिकता देने एवं उनके लिए सरकारी रोजगार उपलब्ध कराने के इस ब्रह्मास्त्र को दाग कर चुनावी समीकरण अपने पक्ष में कर लिये हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसे महिला सशक्तिकरण का राजनीतिक समाधान बताया, क्योंकि राज्य की महिलाएँ कई चुनावों में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। पिछली लोकसभा चुनाव में महिलाओं की मतदान दर पुरुषों से कहीं अधिक रही, 59.45 प्रतिशत महिलाओं ने हिस्सा लिया जबकि पुरुष केवल 53 प्रतिशत मतदान करने पहुंचे। यह आंकड़ा दिखाता है कि चुनावी जीत में महिला मतदाता कितनी निर्णायक हो सकते हैं, साफ है, सत्ता की चाबी वहां महिलाओं ने अपने हाथों में ले ली है और वे धार्मिक व जातिगत आग्रहों से अधिक लैंगिक हितों से प्रेरित हैं। बिहार उन शुरुआती राज्यों में एक है, जिसने पंचायत और स्थानीय निकायों में आधी आबादी के लिए पचास फीसदी सीटें आरक्षित की हैं। इस कदम ने यहां की स्त्रियों में जबर्दस्त राजनीतिक जागरूकता पैदा की है। चुनावों की दशा एवं दिशा बदलने में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक किरदार निभाने के कारण ही हरेक राजनीतिक दल महिला वर्ग को आकर्षित करने में जुट गया है। राजद-कांग्रेस-वाम दलों का महागठबंधन 'माई-बहिन मान योजना' के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 2,500 रुपये देने का वायदा कर चुका है, तो राजद नेता तेजस्वी यादव बेरोजगारी और डोमिसाइल के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रहे हैं। ऐसे में, नीतीश सरकार के इस नीतिगत दांव को समझा जा सकता है। जातिगत और स्थानीय समीकरण भुनाने के लिए निश्चित ही यह एक संगठित चाल है, जहां जाति और आवासीयता दोनों को आधार बनाया गया। यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत में शैक्षिक क्षेत्र में लैंगिक खाई लगातार सिमट रही है। बिहार की बेटियां देश के अनेक महानगरों में अपनी योग्यता और मेहनत के दम पर पहचान बना चुकी हैं। सूचना क्रांति, बढ़ती अपेक्षाओं और सामंती बंधनों के ढीले पड़ते जाने

के कारण अब ग्रामीण बिहार की बेटियां भी ऊंचे सपने संजो रही हैं। हाल ही में बिहार में शिक्षकों की नियुक्ति के दौरान यह देखा गया कि देश के विभिन्न प्रदेशों की योग्य लड़कियां इंटरव्यू देने आईं, जिनमें से अनेक ने सफलता प्राप्त की और अब बिहार के सरकारी स्कूलों में अध्यापन कर रही हैं। निस्संदेह, यह एक सैद्धांतिक रूप से प्रगतिशील और समावेशी समाज का प्रतीक है, जहाँ महिलाएं सीमाओं से परे जाकर अपनी पहचान बना रही हैं। लेकिन व्यावहारिक धरातल पर देखें, तो महिला सुरक्षा, सामाजिक असमानता, आवास व पारिवारिक बाधाएं, और प्रवास की मजबूरियाँ अब भी मौजूद हैं। ऐसे में यदि सरकारें योग्य महिलाओं को उनके घर के आस-पास ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएं, तो यह न केवल महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक कदम होगा, बल्कि सामाजिक संरचना में स्थिरता और पारिवारिक सहूलियत का भी कारण बनेगा। यही कारण है कि नीतीश कुमार सरकार महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए एक के बाद एक योजनाएं ला रही है। साइकिल योजना, पोशाक योजना, कन्या उत्थान योजना, वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि, पिंक टॉयलेट, महिला पुलिस भर्ती में आरक्षण जैसे कई कदम इस सिलसिले में पहले ही उठाए जा चुके हैं। यह मान्यता कि बेटियां अब सिर्फ अपने घरों की शोभा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भागीदार हैं, नीति निर्माण में स्पष्ट झलकने लगा है। यह न केवल बिहार की महिलाओं को उनके अधिकार का अनुभव कराएगा, बल्कि बेरोजगारी से जूझते प्रदेश में स्थानीय प्रतिभा के पलायन को भी रोकेगा। इस फैसले से खास तौर पर निम्न और मध्यमवर्गीय महिलाओं को फायदा होगा, जिनके लिए दूसरे शहरों में जाकर नौकरी करना एक बड़ा पारिवारिक और सामाजिक संकट बन जाता है। घर के पास नौकरी मिलने से न केवल सुरक्षा की भावना बढ़ेगी, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थायी उपस्थिति और भूमिका भी मजबूत होगी।

हालांकि इस फैसले को लेकर विपक्षी दलों की मिश्रित प्रतिक्रिया सामने आई है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने इसे नीतीश कुमार की चुनावी चाल बताया है और आरोप लगाया है कि सरकार महिलाओं की वास्तविक समस्याओं को दूर नहीं कर पा रही, बल्कि सिर्फ भावनात्मक मुद्दों को उछालकर वोट बटोरने की कोशिश कर रही है। तेजस्वी यादव का कहना है कि महिला आरक्षण सही है, लेकिन रोजगार के अवसर कब हैं? सरकारी नियुक्तियों की प्रक्रिया वर्षों से लटकी रहती है, परीक्षा की तारीखें टलती हैं, नियुक्ति पत्र देर से आते हैं, ऐसे में आरक्षण का लाभ कब और किसे मिलेगा? उनकी बातों में सच्चाई भी है, क्योंकि प्रक्रियाओं की पारदर्शिता और समयबद्धता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी आरक्षण की नीति।

यह महिला आरक्षण अब केवल बिहार के स्थायी निवासियों अर्थात डोमिसाइल महिलाओं के लिए ही होगा। यानी जो महिलाएं राज्य की स्थायी निवासी नहीं हैं, उन्हें इस आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा-उन्हें सामान्य श्रेणी में आवेदन करना होगा।

अंडरगार्मेंट्स में कैमरा छिपाकर सब-इंजीनियर एग्जाम में नकल

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। बिलासपुर में पीडब्यूडी सब-इंजीनियर एग्जाम में नकल कराने का वीडियो वायरल हो रहा है।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में PWD की सब इंजीनियर भर्ती परीक्षा में खुलेआम हाईटेक नकल चल रही थी। एग्जाम सेंटर के बाहर से एक युवती अपनी बहन को वायरलेस डिवाइस की मदद से आंसर बता रही थी, जिसे लोगों ने रंगेहाथों पकड़ा है। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक रामदुलारे शासकीय स्वामी आत्मानंद स्कूल में एग्जाम सेंटर के अंदर परीक्षा एक अभ्यर्थी एग्जाम दे रही थी। वह अपने अंडरगार्मेंट्स में स्पाई कैमरा छिपाकर ले गई थी। प्रश्न पत्र को स्कैन कर अपनी बहन को भेज रही थी। वहीं बाहर बैठी बहन वॉकी-टॉकी की मदद से उत्तर बता रही थी।

वहीं इस पर कांग्रेस विधायक देवेंद्र यादव ने कहा कि छत्तीसगढ़ में युवाओं के अधिकारों का हनन हो रहा है। चीट माफिया को संरक्षण दिया जा रहा है, जो बिल्कुल गलत है। इस मुद्दे को विधानसभा में मजबूती से उठाएंगे। सरकार के संरक्षण के बिना संभव नहीं है।

NSUI के नेता और युवती के बीच बहस हो रही है, जिसका वीडियो कार्यकर्ताओं ने बनाया है।

हस्द्ध के नेता और युवती के बीच बहस हो रही है, जिसका वीडियो कार्यकर्ताओं ने बनाया है।

दरअसल, PWD में असिस्टेंट इंजीनियर के 113 पदों के लिए रविवार को व्यवसायिक परीक्षा मंडल (व्यापमं) की ओर से भर्ती परीक्षा आयोजित की गई थी। सरकंडा के उच्चतर माध्यमिक शाला में परीक्षा सुबह 10 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक चली।

इसी एग्जाम सेंटर में अभ्यर्थी अनुसूर्या परीक्षा देने आई थी। एग्जाम सेंटर में तय समय से यानी 10 बजे परीक्षा शुरू हुई, तभी अनुसूर्या स्पाई कैमरा को अंडरगार्मेंट्स में छिपाकर रखी थी। बाहर बैठी अनुराधा अनुसूर्या के पास रखे कैमरे से प्रश्नों को देख रही थी। गूगल में सर्च कर वॉकी-टॉकी की मदद से आंसर बता रही थी।

बताया जा रहा है कि हाईटेक नकल का भंडाफोड़ एक ऑटो ड्राइवर ने किया है। ऑटो ड्राइवर को अनुराधा की एक्टिविटी पर शक हुआ। उसने देखा कि अनुराधा ऑटो में बैठकर लगातार लैपटॉप पर कुछ काम कर रही है। ईयर फोन से बातचीत भी कर रही है।

शक गहराने पर ऑटो ड्राइवर ने तुरंत अपने परिचित हस्द्ध (नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया) के नेता को इसकी सूचना दी। सूचना मिलते ही हस्द्ध नेता विकास ठाकुर अपने कुछ कार्यकर्ताओं के साथ मौके पर पहुंचे।

उन्होंने अनुराधा को रोका और जांच की तो पता चला कि उसके पास लैपटॉप, टैब, माइक्रो ईयर डिवाइस, वायरलेस ट्रांसमीटर, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट मौजूद थे। पूछताछ में अनुराधा ने यह कबूल किया कि वह एग्जाम सेंटर के भीतर बैठी अपनी बहन को प्रश्नों के उत्तर भेज रही थी।

वहीं मामले में बिलासपुर पुलिस ने बताया कि NSUI के माध्यम से जानकारी मिली थी। दोनों लड़कियों को हिरासत में लिया गया है। स्पाई कैमरा और अन्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की जब्ती की गई है। हस्द्ध के कार्यकर्ताओं ने युवतियों और परीक्षा संचालक के खिलाफ FIR की मांग की गई है। मामले की जांच की जा रही है।

4 लोगों ने नाबालिग को चाकू गोदकर मार डाला

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में 4 लोगों ने मिलकर एक नाबालिग लड़के पर चाकू से वार कर दिया, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। युवक लहूलुहान हालत में जिला अस्पताल में तड़पता रहा, जहां उसकी मौत हो गई। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है।मिली जानकारी के मुताबिक मृतक का नाम सुमित बांधे (16) है, जो जरहाभाठा मिनी बस्ती का रहने वाला था। सिविल लाइन पुलिस ने 3 आरोपियों को हिरासत में लिया है, जबकि एक आरोपी मर्डर के बाद से फरार है।

दरअसल, रविवार दोपहर को 2 पक्षों के बीच कहासुनी हो रही थी। विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों पक्षों में मारपीट शुरू हो गई। इस दौरान एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर चाकू से हमला कर दिया, जिसमें सुमित बांधे गंभीर रूप से घायल हो गया। वारदात के बाद नाबालिग को फौरन अस्पताल ले जाया गया।

इस दौरान खून से लहूलुहान नाबालिग अस्पताल में तड़पता रहा। वीडियो में दिख रहा है कि नाबालिग को कुछ लोग उठा रहे हैं उसकी सांसें चल रही है। वह अस्पताल में फर्श पर पड़ा है। कुछ समय बाद डॉक्टर्स ने नाबालिग को मृत घोषित कर दिया।

वहीं मृतक के भाई विजय बांधे ने बताया कि लड़ाई दूसरे से हो रही थी, जब वह घर से निकला तो उसके साथ भी मारपीट की गई। मेरे भाई की लोगों ने मिलकर हत्या की है। उसका किसी से कोई विवाद नहीं था। वह घर से निकला ही था कि हमला कर दिया गया।

परिजनों ने बताया कि नाबालिग की मौत के बाद पुलिस को फौरन सूचना दी गई। जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। इस दौरान पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। साथ ही मौके पर स्थानीय लोगों से पूछताछ की।

वहीं सिविल लाइन थाना प्रभारी एसआर साहू ने बताया कि हालात को देखते हुए मोहल्ले में पुलिस बल की तैनाती की गई थी। 3 लोगों को हिरासत में लिया गया है। पूछताछ की जा रही है। झगड़े की असली वजह क्या थी। इसमें कितने लोग शामिल थे, इसका खुलासा जांच के बाद ही हो पाएगा।

जांजगीर-चांपा में भाई-बहन समेत 4 बच्चे डूबे...मौत

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले में शनिवार दोपहर तालाब में नहाने गए भाई-बहन समेत 4 बच्चों की डूबने से मौत हो गई। मरने वालों में 3 लड़कियां और एक लड़का शामिल है। चारों बच्चे अलग-अलग 3 परिवार के थे। घटना बलोदा थाना क्षेत्र के भैंसतरा गांव की है।

जानकारी के मुताबिक मृत बच्चों में 8 साल पुष्पांजली श्रीवास, 5 साल का तुषार श्रीवास, 6 साल की ख्याति केंवट और 6 साल की अंबिका यादव शामिल हैं। पुष्पांजली श्रीवास और तुषार भाई-बहन हैं। बलोदा पुलिस ने बच्चों के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

शनिवार दोपहर 12 से 1 बजे के बीच चारों बच्चे स्कूल से लौटे। घर में बैग रखकर तालाब की ओर चल दिए। तालाब उनके घरों से अधिक दूर नहीं था। यह गांव में रोजमर्रा की एक सामान्य बात थी। बच्चे गर्मी में तालाब में नहाते थे, लेकिन इस बार बड़ा हादसा हो गया।

परिजनों ने बताया कि कुछ समय बाद जब बच्चे वापस नहीं लौटे, तो परिजन परेशान हुए। उनकी खोज में निकल पड़े। तालाब के किनारे बच्चों के कपड़े और चप्पल पड़े देखे गए, जिससे अनहोनी का शक हुआ। ग्रामीणों ने पानी में तलाश शुरू की। कुछ ही देर में चारों को बाहर निकाला गया।

इसके बाद परिजन तुरंत सीएचसी बलौदा अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन डॉक्टर्स ने जांच के बाद चारों को मृत घोषित कर दिया। इस हादसे की सूचना मिलने पर बलौदा थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची। पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच जारी है।

भैंसतरा गांव में चार बच्चों की एक साथ मौत से पूरे इलाके में मातम छा गया है। एक साथ चार अर्थियां सजने की खबर ने हर आंख नम कर दी है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। वहीं ग्रामीण भी स्तब्ध हैं कि ऐसा हादसा कैसे हो गया।

विधानसभा सत्र...करप्शन-खाद-बीज पर भिड़ेंगे कांग्रेस

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ विधानसभा का मानसून सत्र सोमवार से शुरू हो रहा है। इसे लेकर नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने रविवार को कांग्रेस के सभी विधायकों की राजीव भवन में बैठक बुलाई। इस दौरान महंत ने कहा कि सत्र बहुत कम समय के लिए बुलाया गया है। पहले ही दिन खाद और बीज की कमी को लेकर स्थगन प्रस्ताव लाएंगे।

महंत ने कहा कि बैठक में साय सरकार को घेरने की रणनीति तय की गई। विधायक पूरी मजबूती और आक्रामकता के साथ सत्र में शामिल होंगे। सरकार से जवाब मांगेगे कि किसानों की समस्याओं पर ध्यान क्यों नहीं दिया जा रहा। सदन में मोटी लाठी लेकर जाएंगे।

वहीं ष्टरू विष्णुदेव साय की मौजूदगी में बीजेपी विधायक दल की भी बैठक हुई। इस दौरान संसदीय कार्यमंत्री केदार कश्यप ने कहा कि सरकार पूरी तरह से तैयार है। कांग्रेस के पास मुद्दे नहीं हैं। साथ ही कहा कि सरकार कांग्रेसियों की तरह भागने वाली नहीं है। शराब घोटाले की राशि और बढ़ गई है।

वहीं केदार कश्यप ने कहा कि कई घोटाले हैं, जो कांग्रेस के कारनामों को उजागर करती है। छत्तीसगढ़ की जनता ने उनको चलने लायक छोड़ा नहीं है। चश्मा भी लगा लें, लाठी लेकर चलना भी प्रारंभ कर लें। इसके अलावा उनके पास और कोई चारा नहीं है।

डॉ. महंत ने कहा कि राज्य में अलग-अलग वर्गों के खिलाफ हो रहे अत्याचारों के मुद्दे भी सदन में जोर-शोर से उठाए जाएंगे। रेत के अवैध खनन के दौरान गोली चलने की घटनाएं, कानून-व्यवस्था की स्थिति, स्कूलों का युक्तियुक्तकरण, शराब दुकानों का खोला जाना। बिजली की दरों में बढ़ोतरी जैसे मुद्दों पर कांग्रेस सरकार को घेरेगी।

उन्होंने कहा कि विधायक दल पूरे दमखम के साथ विधानसभा में उतरने को तैयार हैं। बैठक में कुछ विधायक शामिल नहीं हो सके। इस पर डॉ. महंत ने कहा कि कुछ विधायक राहुल गांधी की अगुवाई में आदिवासी विधायकों की बैठक में शामिल होने गए हैं। कुछ के निजी कार्यक्रम हैं। एक विधायक जेल में हैं, इसलिए वे नहीं आ सके।

बैठक से पहले प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने मीडिया को बताया कि विधानसभा का मानसून सत्र कांग्रेस के लिए बेहद अहम है। बैठक में सत्र की रणनीति तैयार की गई है। जनता से जुड़े हर महत्वपूर्ण विषय को सदन में पूरी ताकत से उठाया जाएगा।

बैज ने कहा कि आज प्रदेश के किसान परेशान हैं, युवा बेरोजगार हैं। नकली शराब बिक रही है। अवैध उत्खनन हो रहा है। गरीबों के मकान तोड़े जा रहे हैं। उद्योगपतियों के लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। ऐसे तमाम मुद्दों को हम प्रमुखता से उठाएंगे। कांग्रेस केवल सदन में नहीं, बल्कि सड़क पर भी जनता की आवाज़ बनेगी।

बता दें कि 14 जुलाई से 18 जुलाई तक यानी 5 दिनों के मानसून सत्र को लेकर विधायकों ने कुल 996 सवाल लगाए हैं, जिससे यह स्पष्ट है कि इस बार सदन में तीखी बहस और सरकार पर विपक्ष के तीखे हमले देखने को मिल सकते हैं। राज्य में भाजपा सरकार बने करीब डेढ़ साल हो चुके हैं।

अब कांग्रेस इन 18 महीनों के दौरान हुई गड़बड़ियों को लेकर सरकार को घेरने की तैयारी में है। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार के डेढ़ साल पूरे होने के बाद अब विपक्ष सरकार की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर जनता के मुद्दों को आक्रामक तरीके से उठाएगा।

समय पर नहीं मिला इलाज, बुजुर्ग महिला की मौत

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में समय से इलाज न मिलने की वजह से 65 साल की एक बुजुर्ग महिला की मौत हो गई है। खराब सड़क की वजह से एंबुलेंस 108 को गांव पहुंचने में देरी हुई। आने-जाने में लेट हुआ और महिला की जान चली गई।

बंडी मुड़ियामी (65 साल) जिले के नहाड़ी की रहने वाली थी। वो अपने परिचितों के घर कमारगुड़ा गई हुई थी। पिछले 5-6 दिनों से किसी बीमारी से जूझ रही थी। वहीं परिजन इसे अस्पताल ले जाने के लिए पहले कमारगुड़ा से नहाड़ी पटेल पारा लेकर आए।

फिर यहां से उन्होंने एंबुलेंस 108 को कॉल किया। लेकिन गांव तक पहुंचने के लिए कच्चा रास्ता था, जिससे गाड़ी देर से पहुंची। फिर उसी रास्ते से अस्पताल ले जाया गया लेकिन तब तक उसकी मौत हो गई थी।

जानकारी मिलते ही एंबुलेंस 108 की रेशमा कड़ियाम और पायलेट अशोक सिंह ठाकुर मौके के लिए निकल गए थे। लेकिन गांव तक पहुंचने का रास्ता पूरी तरह से खराब था। जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे, कच्ची सड़क, कीचड़, फिसलन थी।ऐसे में एंबुलेंस को गांव तक पहुंचने में काफी देर हुई। हालांकि, घंटों मशक्कत के बाद 108 पहुंची। मरीज को 108 में बिठाया। जिसके बाद दोबारा उसी खराब रास्ते से जिला अस्पताल के लिए निकले। खराब सड़क की वजह से मरीज को अस्पताल लाने में लेट हुआ। डॉक्टरों के मुताबिक, देरी से इलाज मिलने की वजह से महिला की मौत हो गई है। परिजनों का कहना है कि यदि सड़क की स्थिति ठीक रहती तो समय पर अस्पताल पहुंचाया जा सकता था। जान बच सकती थी।

फ्रिज में बर्फ से बना शिवलिंग, लोग मान रहे बर्फानी बाबा का रूप

मीडिया ऑडीटर, धमतरी **(निप्र)।** सावन माह की शुरुआत के साथ छत्तीसगढ़ के धमतरी से एक अनोखी घटना सामने आई है। बनियापारा में रहने वाली पूजा फुटान के घर के फ्रिज में बर्फ से शिवलिंग का आकार बन गया। जिसे अब लोग बर्फानी बाबा का रूप मान रहे हैं।यह घटना उस समय हुई जब पूजा फुटान पति अरुण फुटान उज्जैन में महाकाल के दर्शन के लिए गए हुए थे। रविवार की सुबह जब पूजा ने फ्रिज खोला, तो उन्होंने देखा कि अंदर बर्फ से शिवलिंग का आकार बन गया है।

इस आकृति को देखकर परिवार ने पूजा-अर्चना की। बच्चों ने तिलक लगाया और आशीर्वाद लिया। घटना की जानकारी फैलने के बाद आसपास के श्रद्धालु भी दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। इसे लोग अमरनाथ बर्फानी बाबा का रूप मान रहे हैं।

पूजा ने कहा कि सावन के पवित्र महीने में उन्हें यह दर्शन मिलना सौभाग्य की बात है। उन्होंने यह भी कहा कि जहां लोग अमरनाथ के दर्शन के लिए कठिन यात्रा करते हैं, वहीं उन्हें घर में ही यह आशीर्वाद मिल गया।

बालोद में किसानों से पैसे लेकर भी नहीं दिया खाद

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। बालोद जिले के डौंडी ब्लॉक के मथाई चौक में संचालित किसान संगवारी कृषि केन्द्र में यूरिया खाद में अनियमितता मिली है। 12 जुलाई को खाद उपलब्ध होने के बावजूद किसानों को नहीं दिए जाने पर हंगामा खड़ा हो गया।

शिकायत के बाद कृषि और राजस्व विभाग की संयुक्त कार्रवाई में गोदाम व कृषि केंद्र को सील कर दिया गया है। साथ ही संचालक मनोज कुमार बुर्रा को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

कृषकों ने शिकायत में बताया कि संचालक ने 24 किसानों से 35 बोरी यूरिया के लिए राशि वसूल की। लेकिन खाद नहीं दी। नाराज किसानों ने इसकी शिकायत तहसीलदार डौंडी से की।

मामले की गंभीरता को देखते हुए उप संचालक कृषि के निर्देश पर एसडीओ महेश कुमार मारगिया और उर्वरक निरीक्षक ऐमन्त कोठारी मौके पर पहुंचे।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- 15 पेज की रिपोर्ट में खुलासा

नई दिल्ली ,एजेंसी। अहमदाबाद प्लेन हादसे के एक महीने बाद शुरुआती जांच रिपोर्ट आ गई है। एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो ने 12 जुलाई को 15 पेज की रिपोर्ट सार्वजनिक की। प्रारंभिक जांच के मुताबिक यह हादसा विमान के दोनों इंजन बंद होने की वजह से हुआ था। टेकऑफ के तुरंत बाद एक-एक करके दोनों फ्यूल स्विच बंद हो गए थे, इस वजह से दोनों इंजन भी बंद हो गए। इस दौरान कॉकपिट की रिकॉर्डिंग से पता चला है कि एक पायलट ने दूसरे से पूछा था कि क्या तुमने स्विच बंद किया है? दूसरे ने जवाब दिया, नहीं। अमेरिकी मीडिया न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक्सपर्ट के हवाले से कहा है कि रिपोर्ट में शामिल सभी प्वाइंट्स प्लेन में टेक्निकल गड़बड़ी न होने और पायलट से चूक की ओर इशारा कर रहे हैं। 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें 241 यात्री और क्रू मेंबर शामिल थे। सिर्फ एक यात्री इस हादसे में जिंदा बचा है।

मराठा काल के 12 किले वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल

नई दिल्ली ,एजेंसी। मराठा काल के 12 किलों को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल किया गया है। इनमें महाराष्ट्र के 11 किले हैं। वहीं, तमिलनाडु का एक जिंजी किला भी सूची का हिस्सा है। सभी किले 17वीं से 19वीं सदी के बीच बने थे। महाराष्ट्र के 11 किलों में सिंधु और शिवनेरी जैसी किले शामिल हैं। रायगढ़ दुर्ग जहां छत्रपति शिवाजी का राजतिलक हुआ था, भी इस सूची में है।

इसके अलावा सालहेर, लोहगढ़, खंडेरी, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला, विजय दुर्ग किले शामिल हैं। पेरिस में यूनेस्को की 47वीं बैठक में इस लिस्ट का ऐलान किया गया। इससे मराठा इतिहास और विरासत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। अब भारत की कुल 44 धरोहर वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में शामिल हो गई हैं। सालहेर किला महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित एक ऐतिहासिक किला है। यह सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में बसा हुआ है और समुद्र तल से करीब 5,156 फीट की ऊंचाई पर है। यह महाराष्ट्र का सबसे ऊंचा किला और भारत का दूसरा सबसे ऊंचा किला माना जाता है। किले तक पहुंचने के लिए ट्रेक करना पड़ता है। रास्ता पहाड़ी और कठिन जरूर है, लेकिन रास्ते में दिखने वाले झरने, घाटियां और हरियाली इसे रोमांचक बनाते हैं। किले के ऊपर से आसपास का नजारा बेहद सुंदर दिखाई देता है।

ग्रामीण जल जीवन मिशन में मध्यप्रदेश बना उदाहरण

भोपाल ,एजेंसी। जल जीवन मिशन के अंतर्गत दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में ग्रामीण जल आपूर्ति योजनाओं की संचालन एवं अनुरक्षण नीति पर विचार-विमर्श हुआ। मुख्य सत्र में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी प्रमुख सचिव श्री पी. नरहरि ने जल जीवन मिशन में मध्यप्रदेश द्वारा अपनाए गए डेटा-संचालित सुधारों पर केंद्रित प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि राज्य में योजनाओं के सतत संचालन के लिए तकनीकी दक्षता, ग्रामीण समुदायों की भागीदारी और सेवा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया है। प्रमुख सचिव श्री नरहरि ने बताया कि प्रभावी बनाने के लिए राज्य ने संपर्क-समस्या-समाधान की स्पष्ट प्रणाली विकसित की है, जिससे सेवा में निरंतरता बनी रहती है। कार्यशाला में मध्यप्रदेश जल निगम के प्रबंध संचालक श्री केवीएस चौधरी ने राज्य के तकनीकी दृष्टिकोण और फील्ड लेवल अनुभव साझा किए।

कार्यशाला में मध्यप्रदेश के प्रयासों की अन्य राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा सराहना की गई। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संचालन और अनुरक्षण नीति को मजबूत करने के लिए राज्यों के बीच सहयोग और नवाचार साझा करना समय की मांग है।

खिलाड़ियों के लिए शुरू होगा 'एक्सचेंज प्रोग्राम'

भोपाल ,एजेंसी। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि मध्यप्रदेश को हॉकी के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल करने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाये। इसी कड़ी में उन्होंने 'प्लेयर एक्सचेंज प्रोग्राम' प्रारंभ करने की घोषणा की। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य के प्रतिभावान खिलाड़ी देश एवं विदेश की प्रतिष्ठित अकादमियों में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि इससे खिलाड़ियों के कौशल में उल्लेखनीय सुधार होगा और वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे। मंत्री श्री सारंग शुक्रवार को तात्या टोपे खेल स्टेडियम में मध्यप्रदेश पुरूष हॉकी खेल अकादमी की समीक्षा कर रहे थे।

मंत्री श्री सारंग ने अकादमी में प्रशिक्षण, खिलाड़ियों की प्रगति, आधारभूत सुविधाओं एवं अकादमी संचालन से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिए कि अकादमी में प्रशिक्षण की गुणवत्ता को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए विदेशी विशेषज्ञ कोच को भी आमंत्रित किया जाए। उन्होंने बताया कि वर्तमान में अकादमी के 8 खिलाड़ी 'इंडियन कोर ग्रुप' में शामिल हैं, और अब यह लक्ष्य बढ़ाकर 16 खिलाड़ियों तक पहुंचाने की कार्ययोजना बनाई जाए। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 में पुरुष हॉकी अकादमी का प्रदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा है इस वर्ष की रणनीति को आधार बनाकर आगामी प्रशिक्षण और चयन प्रक्रिया को संचालित किया जाए। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि खिलाड़ियों के लिये एक्सचेंज प्रोग्राम की शुरूआत की जाये।

इससे न केवल उनके कौशल में निखार आएगा, बल्कि वे अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट्स के लिए मानसिक रूप से भी अधिक तैयार हो सकेंगे। अन्य प्रदेशों के खिलाड़ियों को भी मध्यप्रदेश में आमंत्रित किया जाएगा, जिससे दोनों ओर के खिलाड़ियों को एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने का अवसर मिलेगा। यह दो-तरफ़ा आदान-प्रदान खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

बैठक में जानकारी दी गई कि अकादमी में बोर्डिंग के लिए 56 सीटें और डे-बोर्डिंग के लिए 18 सीटें स्वीकृत हैं। इनमें से वर्तमान में बोर्डिंग में 42 एवं डे-बोर्डिंग में 3 सीटें भरी हुई हैं। बोर्ड़िंग में 14 और डे-बोर्डिंग में 15 सीटें अभी रिक्त हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि रिक्त सीटों को शीघ्र भरने की प्रक्रिया प्रारंभ की जाए और उत्कृष्ट खिलाड़ियों को चिन्हित कर उनके लिए पृथक रणनीति बनाई जाए।

बैठक में बताया गया कि अकादमी में 2 एस्ट्रोटर्फ मैदान (पैविलियन सहित), इंडोर जिम, 226 बिस्तरों की दो छात्रावास इमारतें, 24×7 सेवा वाली पूर्ण रूप से सुसज्जित स्पोर्ट्स मेस, फिजियोथैरेपी कक्ष और एक प्रशिक्षित फिजियोथेरेपिस्ट की सुविधा उपलब्ध है। मंत्री श्री सारंग ने ऐशबाग स्टेडियम में स्थित हॉकी टर्फ का उपयोग प्रशिक्षण के लिए करने के निर्देश दिए।

शहरी उत्कृष्टता के लिए आधुनिक तकनीक विषय पर सत्र में हुई चर्चा

भोपाल ,एजेंसी। ब्रिलियेंट कन्वेंशन सेंटर इंदौर में शुक्रवार को मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉनक्लेव 2025 के अंतर्गत शहरी उत्कृष्टता के लिए आधुनिक तकनीक विषय इंटीग्रेटिंग टेक्नोलॉजी फॉर अर्बन एक्सीलेंस विषय पर सत्र का आयोजन हुआ जिसमें शहरी विकास में आधुनिक तकनीकों जैसे एआई, आईओटी, क्वांटम तकनीकों के प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की गई। सत्र में श्री विनय ठाकुर, स्पेशल डायरेक्टर जनरल बिसेग-एन ने बताया कि शहरी क्षेत्र में उत्कृष्ट अवसंरचना के विकास के लिए आधुनिक तकनीक के एकीकरण से नागरिकों के पक्ष में उपयोग किया जाए जिसमें परिवहन सुविधा, स्मार्ट पुलिसिंग, जिओ टैगिंग कर रेरा नियामकों की मॉनिटरिंग और एआई टूल का मैनेजमेंट के संबंध में बताया गया। सत्र में श्री आर. के. मिश्रा, मैनेजिंग डायरेक्टर, एनआईसीएसआई ने बताया कि आधुनिक तकनीक के समायोजन के लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एनआईसीएसआई के द्वारा शहरी विकास के लिए विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं। श्री कमलाकन्नन थीरुवादी, रीजनल एग्जीक्यूटिव, दक्षिण एशिया बेंटली सिस्टम ने कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में ग्रोथ कॉनक्लेव का आयोजन होना सुखद हैं। उन्होंने कहा कि शहरी अवसंरचना में आधुनिक तकनीक के समायोजन में डिजिटल ट्विन जिसमें रियलटाइम में डेटा का उपयोग करके उसके व्यवहार के अनुकरण के आधार पर एनालिसस कर कार्ययोजना बनाया जाना आवश्यक हैं। जिससे कई समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध डाटा का प्रयोग कर रियलटाइम एनालिसिस कर समग्र रूप से समाधान उपलब्ध कराया जाना चाहिए। मध्यप्रदेश में कई संगठन ऐसे है जो रियलटाइम डाटा का उपयोग कर प्रबंधन का कार्य कर रहे है। जो भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होंगे। श्री टेक्नोलॉजी के प्रयोग के साथ साथ आवश्यक है कि भविष्य के संभावनाओं और साइबर सिक्योरिटी को ध्यान रखते हुए ऐसा मजबूत गवर्नेंस मॉडल विकसित किया जाए जिससे नागरिकों के डाटा एवं जानकारियों को सुरक्षित किया जा सके और साइबर युद्ध जैसी परिस्थितियों में भी सुरक्षित रूप से कार्य कर सकें। श्री शामिक जोशी, हेड एमनैक्स द्वारा बताया गया कि शहरी विकास में कनेक्टिविटी सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है f

भविष्य के लिए सतत हरित शहरीकरण विषय पर हुआ सत्र

भोपाल ,एजेंसी। इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में शुक्रवार को हुये सत्र में मध्यप्रदेश ग्रोथ कान्क्लेव 2025 के अंतर्गत भविष्य के लिए सतत हरित शहरीकरण सत्र में इंटीग्रेटेड टाउन प्लानिंग, वेस्ट मैनेजमेंट, हरित बुनियादी ढांचे का विकास, ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण स्मार्ट सिटी एवं नागरिकों की भागीदारी विषयों पर विचार मंथन किया। प्रमुख सचिव पर्यावरण श्री नवनीत मोहन कोठारी ने कहा है कि सरकार नीतियों एवं चुनौतियों को सुदृढ़ करते हुये हरित नगरों का विकास कर सतत विकास को बढ़ावा देने का प्रयास जारी है। शहरों का विकास इस तरह से करना चाहिए कि पर्यावरण को कम से कम नुकसान हो और लोगों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर हो सके। सत्र में कार्यकारी निर्देशक सीएसई सुश्री अनुमिता रॉय चौधरी ने कहा कि समुदाय हरित विकास की योजना बनाने और उसे लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे पर्यावरण को बचाने और टिकाऊ जीवनशैली को बढ़ावा देने में सक्रिय सहभागिता करते है। अधोसंरचना तत्परता के लिये भवन निर्माण एवं वाहन क्षेत्र में उचित वेस्ट मैनेजमेंट किया जाना चाहिए। रीसाइक्लिंग इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। रीएनर्जी डायनेमिक्स प्राइवेट के सीईओ और सह-संस्थापक श्री वरुण कराड ने कहा कि भविष्य उन्मुखी शहरों का निर्माण किया जाना चाहिए जो अगले कई सालों तक यथावत रहे। ग्रीन बॉन्ड ,कार्बन क्रेडिट एवं पीपीपी मॉडल इस ओर एक अच्छा विकल्प हो सकते हैं। वर्बियो इंडिया के प्रबंध निदेशक श्री आशीष कुमार ने बायो फ्यूल में पीपीपी मॉडल, नीति आधारित समावेशी प्रबंधन विषयों पर चर्चा कर निजी क्षेत्र में तकनीकी अनुभव, प्रमाणित तकनीक एवं प्रमाणीकरण की महत्ता पर ज़ोर दिया गया है । एसएस गैस लैब एशिया के सदस्य आईएफजीई अध्यक्ष नेट जीरो,लघु उद्योग भारती की मुख्य कार्यकारी ने तीव्र औद्योगिक विकास के दौर में ट्रांज़िशन तकनीकों की आवश्यकता पर जोर देते हुए ऐसी तकनीकों के विकास पर बल दिया जिनसे कार्बन फुटप्रिंट को नियंत्रित किया जा सके।

16वां रोजगार मेला, पीएम ने 51 हजार जॉब लेटर बांटे

नई दिल्ली ,एजेंसी। पीएम मोदी ने शनिवार को 16वें रोजगार मेला में 51 हजार से ज्यादा युवाओं को जॉब लेटर बांटें। उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कहा कि युवाओं का सामर्थ्य हमारे भारत के भविष्य के लिए सबसे बड़ी पूंजी और गारंटी है। हमारी सरकार इस पूंजी को समृद्धि का सूत्र बनाने में जुटी है। उन्होंने कहा कि दो दिन पहले ही 5 देशों की यात्रा से लौटा हूं। हर देश में भारत की युवा शक्ति की गूंज सुनाई दी। इस दौरान जो भी समझौते हुए हैं,उनसे युवाओं को फायदा होना ही है। आपके विभाग अलग हैं लेकिन ध्येय एक है। कार्य कोई भी हो, पद कोई भी हो इलाका कोई भी है, एक ही ध्येय राष्ट्र सेवा। एक ही सूत्र नागरिक सेवा। आपकी इस नई यात्रा के लिए बहुत

शुभकामनाएं। रोजगार मेले का आयोजन देश भर में 47 स्थानों पर किया गया। पिछला रोजगार मेला 26 अप्रैल को आयोजित किया गया था। प्रधानमंत्री ने 22 अक्टूबर 2022 को रोजगार मेले का पहला फेज शुरू किया था। अब तक 9.73 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल चुका है। डिफेंस मेन्युफैक्चरिंग में भी भारत नए रिकॉर्ड बना रहा है। डिफेंस प्रोडक्शन सवा लाख करोड़ से ऊपर पहुंच चुका है। भारत सबसे ज्यादा लोकोमोटिव बनाने वाला देश बन गया है।

कई देश में एक्सपोर्ट हो रहा है।

ऐसी अनेक योजनाओं की वजह से 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए। अब आप कल्पना कीजिए इनका आत्मविश्वास कितना होगा। वर्ल्ड बैंक जैसी संस्थाएं भारत को मॉडल की तरह पेश करती हैं। भारत की कम असमानता वाले शीर्ष देशों में रखा जा रहा है।

भारत के 90 करोड़ लोगों को वेलफेयर स्कीम के तहत लाया गया है। इससे बड़ी संख्या में रोजगार बने हैं। पीएम आवास के तहत 4 करोड़ पक्के घर बने हैं। 3 करोड़ घर बन रहे हैं। इसमें मिस्त्री, लेबर, ट्रांसपोर्ट, ट्रक ऑपरेटर कितने लोगों को जॉब मिली। खुशी की बात है ज्यादातर रोजगार गांव में मिल रहे हैं।

आयुष चिकित्सा को मुय धारा में लाकर आमजन को उच्च स्तरीय चिकित्सा देंगे

भोपाल ,एजेंसी। राष्ट्रीय आयुष मिशन की नीतिगत दस्तावेज के लिए अंतर्राज्यीय बैठक शुक्रवार को मध्यप्रदेश के नेतृत्व में भोपाल में संपन्न हुई। बैठक में केंद्रीय आयुष मंत्रालय के अधिकारियों के साथ संबंधित राज्य के आयुष विभाग के उच्च अधिकारी सम्मिलित हुए है। आयुष चिकित्सा को मुख्य धारा में लाकर आमजन को उच्च स्तरीय आयुष चिकित्सा प्रदान करना तथा आयुष विभाग की अधोसंरचना एवं उच्च गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन उपलब्ध कराना इस बैठक का मुख्य उद्देश्य था। साथ ही 2047 के विकसित भारत के संकल्प में आयुष का

महत्पूर्ण योगदान सुनिश्चित करना भी बैठक का उद्देश्य रहा।

आयुष मंत्रालय भारत सरकार ने राष्ट्रीय आयुष मिशन और राज्यों में क्षमता निर्माण के उपविषयों का चयन किया। संगठनात्मक संरचना की समीक्षा मानव संसाधन सुदृढ़ीकरण एवं क्षमता निर्माण के नोडल राज्य मध्यप्रदेश एवं सिक्किम हैं। वर्किंग ग्रुप के अन्य सदस्य राज्य बिहार, दिल्ली, गोवा एवं नागालैण्ड हैं। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में अप्रैल में हुई बैठक में नीति आयोग द्वारा राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में विचार विमर्श के लिए आगामी 6 शिखर सम्मेलन के 6 विषय का चयन किया गया है। चयनित विषयों में से एक विषय के रूप में राष्ट्रीय आयुष मिशन और राज्यों में क्षमता निर्माण का चयन किया गया है वर्किंग ग्रुप मीटिंग में मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय आयुष मिशन के राज्य प्रमुख/प्रबंधक के साथ केंद्रीय आयुष मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी डॉ ए. रघु, प्रदेश की आयुष आयुक्त आर उमा आयुष डायरेक्टर डॉ योगिता मुंजाल एवं अन्य राज्य से आए प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

5000 से अधिक आबादी वाली ग्राम पंचायतों में बनेंगे 2 सामुदायिक भवन-मंत्री श्री पटेल

भोपाल ,एजेंसी। मध्यप्रदेश में जिन ग्राम पंचायतों की आबादी 5 हजार से ज्यादा है उन पंचायतों में दो सामुदायिक भवन बनाए जाएंगे। इसके साथ ही 10 से 12 ग्राम पंचायतों के क्लस्टर-क्लस्टर वाली ग्राम पंचायत में उप यंत्री का कार्यालय बनाया जाएगा। पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने शुक्रवार को बालाघाट जनपद पंचायत के ग्राम भरवेली में 64 लाख रुपए की लागत से नवनिर्मित सर्व-सुविधायुक्त ग्राम पंचायत भवन के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित करते यह बात हुए कही। उन्होंने ग्राम पंचायत भवन परिसर में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं समाज सेविका माता सावित्री बाई फुले की प्रतिमा का अनावरण किया और विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण किया।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि भरवेली ग्राम पंचायत भवन लोकार्पण का कार्यक्रम यादगार दिन है। देश के विकास की रीढ़ माने जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी एवं महान समाजसेवी सावित्री बाई फुले की प्रतिमा का अनावरण करने का अवसर सौभाग्य की बात है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल जी के प्रयासों से देश के गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ा गया है। उनके द्वारा प्रारंभ की गई यह योजना आज भी फलीभूत हो रही है। समाजसेविका सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा के लिए जो काम किया है उसे भुलाया नहीं जा सकता है।

आने वाले समय में प्रदेश में बिना भवन की कोई भी ग्राम पंचायत नहीं रहेगी। राज्य में चरण बद्ध रूप से ग्राम पंचायत भवन बनाए जा रहे हैं और उनके साथ ही सामुदायिक भवन भी बना रहे हैं। जिन ग्राम पंचायतों की आबादी 05 हजार से अधिक है वहां पर दो सामुदायिक भवन बनाये जाएंगे। भरवेली को भी इसका लाभ मिलेगा।

मंत्री श्री पटेल ने जल गंगा संवर्धन अभियान में बालाघाट जिले के प्रदेश में तृतीय स्थान पर आने के लिए सराहना करते हुए कहा कि बालाघाट जिले ने इस अभियान में अच्छा कार्य किया है। उन्होंने प्रशासन एवं जन-प्रतिनिधि बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 15 जुलाई से 15 अगस्त तक सरकारी भूमि पर पौधारोपण का अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान में पौधे लगाने के साथ ही उनके जीवित रहने की गारंटी भी ली जाएगी। पौधे उन्हीं स्थान पर लगाए जाएंगे जहां उनकी सुरक्षा के लिए फेंसिंग की व्यवस्था होगी और गर्मियों के दिनों में पानी की व्यवस्था होगी। 15 अगस्त से 15 सितंबर तक एक बगिया मां के नाम अभियान चलाया जाएगा और इसमें ऐसे महिला समूह जिनके पास 01 एकड़ भूमि उपलब्ध है उस पर फलों के पौधे लगवाए जाएंगे।

महिला समूह को पहले वर्ष 02 लाख रुपए, दूसरे वर्ष 52 हजार रुपए एवं तीसरे वर्ष 48 हजार रुपए की राशि उनके कार्य की प्रगति पर दी जाएगी।

प्रदेश के दो मुक्केबाज खिलाड़ियों का - 22 नेशनल कैंप के लिए चयन

भोपाल ,एजेंसी। मध्यप्रदेश के दो उभरते मुक्केबाज़ों मलिका 48 किग्रा वर्ग एवं अमन 90 किग्रा वर्ग का चयन अंडर-22 राष्ट्रीय बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर के लिए हुआ है। यह प्रशिक्षण शिविर 12 से 30 जुलाई तक आर्मी स्पोर्ट्स इंस्टिट्यूट पुणे में आयोजित होगा। मध्यप्रदेश के इन होनहार खिलाड़ियों के चयन पर खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दोनों खिलाड़ियों को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि मलिका और अमन जैसे युवा खिलाड़ियों का नेशनल कैंप में चयन प्रदेश के लिए गर्व की बात है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये दोनों खिलाड़ी आने वाले समय में देश

के लिए पदक जीतेंगे और प्रदेश का नाम रोशन करेंगे। पुणे में आयोजित यह प्रशिक्षण शिविर न केवल उन्हें तकनीकी दृष्टि से सशक्त बनाएगा, बल्कि आगामी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट्स की तैयारी के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

कार्य में उदासीनता बरतने वाले चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ पर हुई कार्यवाही

भोपाल ,एजेंसी। शहरी क्षेत्र में संचालित स्वास्थ्य संस्थानों में कार्य के दौरान लापरवाही एवं उदासीनता बरतने वाले चिकित्सकों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध सीएमएचओ भोपाल डॉ. मनीष शर्मा ने कार्यवाही करते हुए वेतन कटौती सहित कारण बताओं नोटिस जारी किया है। 9 जुलाई को आयोजित एक्सटेंडेड प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर से बिना किसी पूर्व सूचना के अनुपस्थित पाए जाने पर मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक नटखट चौराहा के चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुमित त्यागी को कारण बताओं नोटिस जारी कर 7 दिन का वेतन काटा गया है।

वरिष्ठ कार्यालय के निर्देशों की अवहेलना और हितग्राहियों को स्वास्थ्य लाभ से वंचित करने के कारण उनके विरुद्ध यह कार्रवाई की गई है। मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक दशमेश नगर के चिकित्सा अधिकारी डॉ.आयुष्मान सिंह एवं नर्सिंग ऑफिसर श्रीमती दुर्गेश्वरी पटैया को ओपीडी के समय संस्था से अनुपस्थित मिलने पर कारण बताओं नोटिस जारी कर 7 दिन का वेतन काटने के आदेश जारी किए गए हैं।

14 साल के वैभव सूर्यवंशी ने रचा इतिहास, आईपीएल से लेकर इंग्लैंड में मचाई धूम

नई दिल्ली ,एजेंसी। आईपीएल 2025 से भारतीय क्रिकेट को एक नया सितारा मिल गया है। बिहार के समस्तीपुर में जन्मे महज़ 14 साल के वैभव सूर्यवंशी ने अपनी धमाकेदार बल्लेबाज़ी से सबको चौंका दिया है। आईपीएल से लेकर इंग्लैंड दौरे तक उन्होंने अपनी प्रतिभा का ऐसा जलवा दिखाया कि विशेषज्ञ भी उनकी तुलना सचिन तेंदुलकर और ब्रायन लारा जैसे दिग्गजों से करने लगे हैं। वैभव सूर्यवंशी आईपीएल खेलने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बन गए। राजस्थान रॉयल्स ने उन्हें 2025 की नीलामी में 1.10 करोड़ रुपये में खरीदा। उन्होंने 14 साल और 23 दिन की उम्र में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में डेब्यू किया। पहले ही मैच में 20 गेंदों पर 34 रन ठोक दिए।

आईपीएल-2025 में वैभव ने 7 मैच खेले और 36 की औसत से 252 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से एक शतक और एक अर्धशतक निकला।

उन्होंने 24 छक्के और 18 चौके जड़ते हुए दिखा दिया कि उम्र महज एक नंबर है। राजस्थान के बाद, वैभव को भारत की अंडर-19 टीम में इंग्लैंड दौरे के लिए चुना गया। वहां भी उन्होंने मौके को हाथ से जाने नहीं दिया।

ब्रायन लारा ने कहा रिकॉर्ड बनते ही हैं टूटने के लिए-मुल्डर

बुलावायो ,एजेंसी। दक्षिण अफ्रीका के ऑलराउंडर वियान मुल्डर ने खुलासा किया है कि महान बल्लेबाज ब्रायन लारा ने उनसे कहा था कि उन्हें उनके टेस्ट क्रिकेट के सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर के रिकॉर्ड को तोड़ने की कोशिश करनी चाहिए थी। जिम्बाब्वे के खिलाफ बुलावायो में खेले गए दूसरे टेस्ट में मुल्डर 367 रन बनाकर नाबाद थे, लेकिन उन्होंने लंच के समय टीम की पारी घोषित कर दी। इस फैसले के चलते वे लारा के 400* रन के रिकॉर्ड से सिर्फ 33 रन पीछे रह गए। मुल्डर ने उस समय कहा था कि लारा का रिकॉर्ड लारा के ही नाम रहना चाहिए। हालांकि अब उन्होंने बताया कि इस पर लारा की सोच अलग थी। मुल्डर ने कहा कि उन्होंने लारा से बात की और लारा ने कहा कि रिकॉर्ड बने ही टूटने के लिए होते हैं और उन्हें अपना नाम इतिहास में दर्ज कराने का मौका नहीं छोड़ना चाहिए था। मुल्डर के मुताबिक लारा ने उनसे कहा कि वे अपनी लीगेसी बना रहे हैं और ऐसे मौकों का पूरा फायदा उठाना चाहिए। मुल्डर ने यह भी माना कि यह सुनकर उन्हें अच्छा लगा और यह एक दिलचस्प नजरिया था, लेकिन उन्होंने दोहराया कि उन्हें लगता है कि उन्होंने खेल का सम्मान किया और सही फैसला किया। मुल्डर का 367* दक्षिण अफ्रीका के लिए टेस्ट में सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है और टेस्ट इतिहास में यह पांचवां सबसे बड़ा स्कोर है। मुल्डर ने यह भी बताया कि दक्षिण अफ्रीका के कोच शुक्री कॉनराड ने भी उनसे कहा था कि महान खिलाड़ियों का रिकॉर्ड उनके ही नाम रहना चाहिए। मुल्डर के दोहरे और तिहरे शतक की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने तीन दिन के भीतर यह टेस्ट पारी और 236 रन से जीत लिया था।

टी20 वर्ल्ड कप 2026-अब तक 15 टीमों ने किया क्वालीफाई

नई दिल्ली ,एजेंसी। टी20 वर्ल्ड कप 2026 के लिए अब तक कुल 20 में से 15 टीमों का चयन हो चुका है। इस लिस्ट में सबसे चौंकाने वाला नाम है इटली का। जिसने पहली बार किसी भी स्तर के क्रिकेट वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई कर इतिहास रच दिया है। यूरोप क्वालीफायर्स के जरिए नीदरलैंड्स के साथ इटली को भी टी20 वर्ल्ड कप 2026 का टिकट मिल गया है। नीदरलैंड्स की टीम पहले भी इस टूर्नामेंट का हिस्सा बनती रही है, लेकिन इटली ने पहली बार यह उपलब्धि हासिल की है, जिससे वर्ल्ड क्रिकेट में उत्साह की लहर है। टी20 वर्ल्ड कप 2026 की मेजबानी संयुक्त रुप से भारत और श्रीलंका के पास है। इस कारण दोनों होस्ट नेशन को बिना क्वालीफायर खेले टूर्नामेंट का टिकट मिला है। इनके अलावा टी20 वर्ल्ड कप 2024 की टॉप-7 टीमों को भी सीधे एंट्री मिल गई है, जिनमें अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और वेस्टइंडीज शामिल हैं। वहीं तीन टीमों को उनकी ताजा आईसीसी टी20 रैंकिंग के आधार पर टूर्नामेंट का टिकट मिला है। ये टीमें हैं आयरलैंड, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान। कनाडा ने अमेरिका क्षेत्र के क्वालीफायर में जीत दर्ज कर 13वीं टीम के रूप में टी20 वर्ल्ड कप 2026 में प्रवेश किया था।

मंत्रालय ने विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करने वाले खिलाड़ियों को विदेश में अभ्यास की मंजूरी दी

नई दिल्ली ,एजेंसी। खेल मंत्रालय के मिशन ओलंपिक इकाई (एमओसी) ने मौजूदा भाला फेंक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा सहित विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करने वाले भारतीय ट्रैक एवं फील्ड स्पर्धा के खिलाड़ियों के पदक की संभावना को बढ़ाने के लिए लंबी अवधि के विदेशी प्रशिक्षण दौरों को मंजूरी दे दी है।भारतीय खिलाड़ी सितंबर में होने वाले विश्व चैंपियनशिप से पहले यूरोप और अमेरिका में अभ्यास करेंगे। एमओसी की 157वीं बैठक में एथलेटिक्स को सबसे ज्यादा फायदा हुआ। एथलेटिक्स के लिए 86 लाख रुपये के प्रशिक्षण और प्रतियोगिता प्रस्तावों को मंजूरी दी गयी है। इस राशि का एक बड़ा हिस्सा उन खिलाड़ियों के लिए निर्धारित किया गया है जिन्होंने 13 से 21 सितंबर तक तोक्यो में होने वाली प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया है।

नीरज चोपड़ा के नाम विश्व चैंपियनशिप के दो पदक है और 27 साल का यह खिलाड़ी एक बार फिर से भारत के लिए पदक की सबसे बड़ी उम्मीद होगा। वह 57 दिनों के लिए प्राग और चेक गणराज्य के निम्बार्क में प्रशिक्षण लेंगे। वह शुक्रवार रात अपने फिजियो ईशान मारवाह के साथ रवाना होंगे और पांच सितंबर तक यूरोपीय देश में रहेंगे।

इस पूरे प्रशिक्षण का खर्च 19 लाख रुपये आएगा। चोपड़ा ने 2022 में रजत और 2023 में स्वर्ण पदक जीता था। वह अंजू बॉबी जॉर्ज (2003 में लंबी कूद में कांस्य) के बाद इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता के पोडियम पर पहुंचने वाले पहले भारतीय हैं। स्टीपलचेज खिलाड़ी अविनाश साबले, पारुल चौधरी और लंबी दूरी के धावक गुलबीर सिंह 15 जुलाई से तीन सितंबर तक कोलोराडो स्प्रिंग्स, लॉस एंजिल्स में प्रशिक्षण लेंगे। सरकार ने तीनों के प्रशिक्षण खर्च के लिए 41.29 लाख रुपये मंजूर किए हैं।

ये तीनों राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक हैं और उन्होंने मई में एशियाई चैंपियनशिप के दौरान अच्छा प्रदर्शन किया था।

इसमें साबले ने स्वर्ण पदक जीता, जबकि चौधरी ने महिलाओं की स्टीपलचेज और 5000 मीटर दौड़ में रजत पदक हासिल किया था। गुलवीर ने पुरुषों की 10,000 मीटर के साथ-साथ 5,000 मीटर स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक हासिल किया था।

खेल मंत्रालय ने मध्यम दूरी के धावक अजय कुमार सरोज को शीर्ष खिलाड़ियों के साथ अभ्यास के लिए 10.32 लाख रुपये स्वीकृत किए हैं। उन्होंने 2023 में हांगझोऊ एशियाई खेलों में रजत पदक जीता था। पिछले साल का अधिकांश समय सरोज टखने की चोट से जूझते रहे थे। लंबी कूद के खिलाड़ी मुरली श्रीशंकर 19 जुलाई से 14 अगस्त तक यूरोप और मध्य एशिया (पुर्तगाल, स्पेन और कजाकिस्तान) में प्रतियोगिताओं के लिए जाएंगे, जिसके लिए सरकार ने 5.58 लाख रुपये मंजूर किए हैं।

वेंगसरकर के बाद लॉर्ड्स में एक से ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय बने राहुल

नई दिल्ली ,एजेंसी। सलामी बल्लेबाज केएल राहुल शनिवार को मध्यक्रम के दिग्गज खिलाड़ी दिलीप वेंगसरकर के बाद लॉर्ड्स में एक से ज्यादा शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बन गए।

राहुल ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन लंच ब्रेक के तुरंत बाद जोफ्रा आर्चर की गेंद पर कवर्स में एक रन लेकर यह उपलब्धि हासिल की। हालांकि राहुल तिहरे अंक तक पहुंचने के तुरंत बाद ऑफ स्पिनर शोएब बशीर की गेंद पर आउट हो गए। यह खेल के पारंपरिक प्रारूप में कुल मिलाकर उनका 10वां और विदेशी धरती पर नौवां शतक था। कर्नाटक के इस खिलाड़ी ने 177 गेंद में 13 चौकों की मदद से 100 रन बनाए। लीड्स में श्रृंखला के पहले मैच में शतक लगाने के बाद मौजूदा पांच मैचों की श्रृंखला में यह उनका दूसरा शतक है।

राहुल ने क्रीज पर कुछ शानदार ड्राइव और फ्लिक खेले। वेंगसरकर ने 1979, 1982 और 1986 में लॉर्ड्स में तीन शतक लगाए हैं। राहुल और वेंगसरकर सहित 10 भारतीय लॉर्ड्स में 'ऑनर्स बोर्ड' पर जगह बनाने में कामयाब रहे हैं। वेंगसरकर क्रिकेट के मक्का कहे जाने वाले इस प्रतिष्ठित स्थल पर सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज हैं। राहुल ने इस स्थल पर पहला शतक 2021 में लगाया था जब उन्होंने भारत की 151 रन की जीत में 129 रन बनाए थे। श्रृंखला अभी 1-1 से बराबर है।

राहुल ने तीसरे दिन मैच में हुए विवाद का कारण

लॉर्ड्स ,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट के बल्लेबाज केएल राहुल ने इंग्लैंड के साथ यहां जारी तीसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन अंतिम ओवर में हुए विवाद को लेकर अपनी बात रखी है। राहुल ने उस ओवर में हुए विवाद को लेकर कहा कि हमारे आउट होने के बाद मेजबान टीम को दो ओवर खेलने थे क्योंकि दोनों टीमों के स्कोर बराबर थे। ऐसे भारतीय टीम गेंदबाजी को लेकर उत्साहित थी पर मेजबान इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाजों ने अलग-अलग बहाने कर समय बर्बाद करने का प्रयास किया।इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज जैक क्रॉली के समय बर्बाद करने के प्रयासों से कप्तान शुभमन गिल भी नाराज हुए। उन्होंने इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज पर कुछ कमेंट किया। ओवर की पांचवीं गेंद के बाद क्रॉली की ग्लव्स पर गेंद लगी और उन्होंने फिजियो को बुलाया। जिससे भारतीय टीम ने उन्हें ताने मार दिया। इसमें शुभकन सबसे आगे थे। राहुल ने कहा कि भारत दो ओवर फेंकना चाहता था और छह मिनट बचे होने के इसमें कोई परेशानी नहीं थी। राहुल ने कहा कि टीम उत्साहित थी क्योंकि वे जानते हैं कि पूरे दिन मैदान में रहने के बाद देर से बल्लेबाजी करने के लिए आना कितना कठिन होता है। राहुल ने कहा, हां, मेरा मतलब है, मैंने शुभमन को उत्साहित देखा है पर जाहिर है, हम 2 ओवर फेंकना चाहते थे। 6 मिनट बचे थे इसमें 2 ओवर फेंकना किसी भी टीम के लिए आसान नहीं होता है। इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाजों ने अंत में थोड़ा परेशान किया। वहीं हम उम्मीद कर रहे थे कि वहां एक विकेट ले सकते और दिन के अंत में एक विकेट हमारे लिए फायदेमंद रहता। इसलिए बल्लेबाजों का समय बर्बाद करना हमें खराब लगा। ' राहुल ने कहा कि टीम खेल की स्थिति को देखते अच्छी थी। तीन दिनों के बाद दोनों पक्षों के बीच कुछ भी जबरदस्त टक्कर थी।. 卐मुझे लगता है कि यमय बर्बाद किये बिना भी हम वैसे भी उत्साहित होते क्योंकि खेल की स्थिति यही है। अब चौथे दिन हमारा प्रशसा मेजबान टीम को ऑलआउट करना रहेगा।

बनीं विंबलडन चैंपियन, 114 सालों में ऐसा पहली बार हुआ

नई दिल्ली ,एजेंसी। पोलैंड की स्टार टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियातेक ने धमाकेदार अंदाज में विबंलडन 2025 चैंपियन बन गई हैं। उन्होंने ऑल इंग्लैंड क्लब के ग्रास कोर्ट पर महिला सिंगल्स फाइनल में अमेरिका की अमांडा अनिसिमोवा को 6-0 से रौंदा। स्वियातेक ने पहली बार टूर्नामेंट का खिताब जीता है। इस ग्रैंडस्लैम में लगातार आठवीं बार पहली महिला चैंपियन देखने को मिली है। आठवीं वरीयता प्राप्त इगा ने शुरुआत से ही बढ़त बना ली और महज 57 मिनट में जीत दर्ज की। ये 114 सालों में विंबलडन का पहला महिला फाइनल था, जिसमें प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी एक भी गेम नहीं जीत सकी। स्वियातेक ओपन एरा में फाइनल में कोई भी गेम हारे बिना मेजर टाइटल जीतने वाली दूसरी खिलाड़ी बन गई हैं। उनसे पहले स्टेफी ग्राफ ने 1988 में आयोजित फ्रेंच ओपन में नतालिया ज्वेरेवा को हराया था। स्टेफी ग्राफ 32 मिनट में चैंपियन बनी थीं। वहीं 24 वर्षीय इगा फ्रेंच ओपन में चार और अमेरिकी ओपन में एक ट्रॉफी अपने नाम कर चुकी हैं।

इगा कुल अंक में 55-24 से आगे रहीं और इस दौरान उन्होंने महज 10 विनर लगाए। पहली बार ग्रैंडस्लैम के फाइनल में पहुंची 23 वर्षीय अमांडा शुरुआत से ही लड़खड़ाती रहीं और 28 अनफोर्स्ड गलतियां पर बैठीं। इगा ने इस तरह लंबे समय से चले आ रहे ट्रॉफी के सूखे को खत्म कर दिया। उन्होंने पिछली ट्रॉफी एक साल से भी ज्यादा समय पहले जून 2024 में रोलां गैरां में जीती थी। इगा की जीत बाकियों से अलग इसलिए है क्योंकि उन्हें दबदबे भरे बेहतरीन प्रदर्सन से ये जीत नसीब हुई है।

शुभमन गिल और जैक क्रॉली के बीच हुए विवाद पर माइकल वॉन का बयान

नई दिल्ली ,एजेंसी। लॉर्ड्स में खेले जा रहे भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन के खत्म होते-होते रोमांचक नजारा देखने को मिला। इस दौरान इंग्लैंड के बल्लेबाज जैक क्रॉली समय बर्बाद करते दिखे। वहीं इन सबके बीच टीम इंडिया के कप्तान शुभमन गिल और जैक क्रॉली के बीच तनातनी देखने को भी मिली। इस पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन का मानना है कि जैक क्रॉली की समय बर्बाद करने की रणनीति उनके द्वारा अब तक देखी गई सबसे बेहतरीन रणनीति थी लेकिन उन्होंने कहा कि भारत शिकायत नहीं कर सकता। वॉन का कहना है कि भारत ने भी दूसरे दिन यही तरीका अपनाया था। दरअसल, भारत के 387 रन पर आउट होने के बाद मेहमान टीम के पास तीसरे दिन के अंतिम सत्र में दो ओवर फेंकने का पर्याप्त समय था लेकिन क्रॉली के चोट का बहाना बनाने और जसप्रीत बुमराह के शुरुआती ओवर के दौरान तीन बार गेंद खेलने से पीछे हट जाने की रणनीति के कारण देरी हुई। भारत को इससे सिर्फ एक ओवर फेंकने का मौका मिला जिससे मेहमान टीम नाराज हो गई क्योंकि इंग्लैंड ने तीसरे दिन अपनी दूसरी पारी में बिना किसी नुकसान के दो रन बनाए।

वॉन ने बीबीसी के टेस्ट मैच स्पेशल पॉडकास्ट में कहा कि, ये समय की बर्बादी का अब तक का सबसे अच्छा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि, भारत शिकायत नहीं कर सकता क्योंकि कल गिल की पैर की मांसपेशियों में खिंचाव आ गया था। राहुल मैदान से बाहर थे और वह पारी की शुरुआत नहीं कर पाते। वॉन ने आगे कहा कि, ये दोनों टीमों के लिए एक जैसा मामला है।

उन्होंने कहा कि, कोई भी टीम शिकायत नहीं कर सकती लेकिन क्या बेहतरीन ड्रामा था और क्या बेहतरीन दिन था। हमें चौथे और पांचवें दिन का खेल देखना है जो शानदार होगा। इंग्लैंड के एक अन्य पूर्व कप्तान एलिस्टेयर कुक ने कहा कि 1-1 से बराबरी पर चल रही इस सीरीज में रोमांच लाने के लिए ऐसे ही ड्रामा की जरूरत थी।

मिस्टीरियो और डोमिनिक मिस्टीरियो में जानिए कौन है ज्यादा अमीर

नई दिल्ली ,एजेंसी। डब्ल्यूडब्ल्यूई में मिस्टीरियो नाम एक ऐसा नाम है जिसे दुनियाभर के रेसलिंग फैंस अच्छी तरह पहचानते हैं। रे मिस्टीरियो को लूचा लिब्रे स्टाइल का सबसे बड़ा दिग्गज माना जाता है। अपने तीन दशक लंबे करियर में उन्होंने कई चैंपियनशिप्स जीती हैं और डब्ल्यूडब्ल्यूई हॉल ऑफ फेम में भी जगह बनाई है। वहीं उनके बेटे डोमिनिक मिस्टीरियो ने हाल के वर्षों में डब्ल्यूडब्ल्यूई में धमाकेदार एंट्री कर अपने पिता की छाया से बाहर निकलकर अपनी अलग पहचान बनाई है। हालांकि, ऑन-स्क्रीन कहानी में दोनों के रिश्ते अब अच्छे नहीं हैं और पिता-बेटे दुश्मन की भूमिका में नजर आते हैं।

नेट वर्थ के मामले में दोनों के बीच फिलहाल बड़ा अंतर है। रिपोर्ट्स के अनुसार, रे मिस्टीरियो की कुल संपत्ति करीब 10 मिलियन डॉलर (लगभग 83 करोड़ रुपये) है। वहीं डोमिनिक की संपत्ति लगभग 2 मिलियन डॉलर (करीब 16 करोड़ रुपये) बताई जाती है। यह अंतर इसलिए भी स्वाभाविक है क्योंकि रे पिछले 30 सालों से रेसलिंग में सक्रिय हैं जबकि डोमिनिक को डब्ल्यूडब्ल्यूई में आए हुए महज पांच साल ही हुए हैं। बावजूद इसके, इतनी कम उम्र में 2 मिलियन डॉलर की संपत्ति बनाना डोमिनिक के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। डोमिनिक ने अपने करियर की शुरुआत पिता के साथ टैग टीम के रूप में की थी। बाद में उन्होंने जजमेंट डे नामक ग्रुप जॉइन कर लिया और रे से अलग हो गए। इस दौरान उन्होंने रेसलमेनिया 39 में अपने ही पिता के खिलाफ मुकाबला भी लड़ा, जिसने डब्ल्यूडब्ल्यूई फैंस के बीच काफी चर्चा बटोरी। वर्तमान में दोनों सुपरस्टार मंडे नाइट आरएडब्ल्यू का हिस्सा हैं और डोमिनिक को डब्ल्यूडब्ल्यूई का सबसे बड़ा हील (विलेन) माना जाता है।

जहां रे मिस्टीरियो अपने करियर के अंतिम दौर में हैं, वहीं डोमिनिक तेजी से सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे हैं। 2025 तक और उसके बाद ऐसा मुमकिन है कि डोमिनिक अपने पिता से भी ज्यादा कमाई करने लगें। रेसलिंग में उनकी तेजी से बढ़ती लोकप्रियता और निरंतर सफलता इस बात का संकेत देती है कि भविष्य में डोमिनिक डब्ल्यूडब्ल्यूई के सबसे अमीर और बड़े सुपरस्टार्स में शुमार हो सकते हैं।

बसामन मामा गौवन्य विहार में फरवरी में होगी आचार्य राजेन्द्रदास की कथा - उप मुख्यमंत्री

वन्य विहार में चार निर्माण कार्यों का हुआ लोकापर्ण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने बसामन मामा गौवन्य विहार अभ्यारणय में चार निर्माण कार्यों का लोकार्पण किया। उप मुख्यमंत्री ने वन्य विहार के विश्राम गृह में केयरटेकर आवास तथा किचन का लोकार्पण किया। इसके बाद उप मुख्यमंत्री 43 लाख 49 हजार रूपये की लागत से मनरेगा योजना तथा खनिज मद से निर्मित स्टाप डैम तथा रपटा और चेकडैम निर्माण का लोकार्पण किया। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक भवन में आयोजित बैठक में गौवन्य विहार के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि शेष निर्माण कार्यों को तय समय सीमा में पूरा करें। सामुदायिक शौचालय निर्माण, भोजन शाला तथा पेवर लगाने का कार्य शीघ्र पूरा करायें। बसामन मामा में आगामी फरवरी माह में मलूकदास पीठ के स्वामी आचार्य राजेन्द्रदास की चार दिवसीय कथा का आयोजन किया जा रहा है। यह सब पूरे क्षेत्र के लिए गौरव का क्षण होगा।

बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वन विभाग के अधिकारी गौवन्य विहार में पांच हजार पौधे रोपित करायें। बांस का रोपण करके ग्रीन फेंसिंग बना दें। कार्यपालन यंत्री पीएचई दो संपबेल का निर्माण पूरा कराके पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें। पुर्वा में 2 करोड़ 83 लाख रूपये की लागत से विद्युत सबस्टेशन का निर्माण मंजूर हो गया है। इसका निर्माण तत्काल शुरू करायें। इससे गौशाला को पर्याप्त बिजली आपूर्ति के साथ आसपास के सभी गांव की विद्युत व्यवस्था बेहतर होगी। बसामन मामा गौवन्य विहार के विकास से जुड़े कार्यों में समय पर भुगतान करायें। उप मुख्यमंत्री ने वन्य विभाग के अधिकारियों को हिनौती गौधाम में 3 ब्लाक बनाकर 4 हजार पौधे रोपित करने के निर्देश दिये। बैठक में विधायक सिरमौर दिव्यराज सिंह ने कहा कि बसामन मामा गौवन्य विहार में 8 हजार निराश्रित गौवंश को आश्रय मिल रहा है। उप मुख्यमंत्री जी के सतत प्रयासों से यह गौवन्य विहार आधुनिक गौशाला के रूप में विकसित हो गया है। इसका लाभ आसपास के गांव के किसानों को देते हुए इस क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय। इससे किसानों और गौशाला की दोनों की आय में वृद्धि होगी। बैठक में पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि उप मुख्यमंत्री जी की पहल से लक्ष्मणबाग उनके बाद बसामन मामा और हिनौती में गौधाम का विकास हो रहा है। इससे हजारों निराश्रित गायों को आश्रय मिला है। गायों की सेवा का फल ही क्षेत्र में विकास के रूप में मिल रहा है। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी, जनपद प्रतिनिधि गंगेव विकास तिवारी, नंदनी तिवारी, स्थानीय जनप्रतिनिधिगण, एसडीएम सिरमौर पीके पाण्डेय, कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड अनुज प्रताप सिंह, उप संचालक पशुपालन डॉ. राजेश मिश्रा, कार्यपालन यंत्री पीएचई संजय पाण्डेय, परियोजना अधिकारी जिला पंचायत संजय सिंह तथा अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के पूर्व उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने गौशाला का भ्रमण करके गौसेवा की उप मुख्यमंत्री ने गायों को गुड, चना और चारा खिलाया। उप मुख्यमंत्री ने गौशाला में साफ-सफाई तथा शेड की मरम्मत के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिये।

सतना में बोरवेल में गिरी दो सगी बहनें, एक का शव मिला

दूसरी की तलाश में जुटी रेस्क्यू टीम, खेत में खेलते समय हादसा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में खेत में पुराने बोरवेल के गड्ढे में दो सगी बहनें डूब गईं। बड़ी बहन का शव बरामद कर लिया है। वहीं छोटी बहन अंदर फंसी हुई है। बताया जा रहा है एक बच्ची का पैर फिसला और दूसरी उसे बचाने की कोशिश में डूब गई।

हादसा नागौद थाना क्षेत्र के रेरुआ कला गांव में रविवार शाम 5 बजे हुआ। स्थानीय लोगों की मदद से परिजन ने पुलिस को सूचना दी। इसके बाद देर रात एसडीएम समेत पुलिस प्रशासन के अफसर मौके पर पहुंचे। एक बच्ची की तलाश में रेस्क्यू टीम जुटी है।

करही निवासी छक्कू अहिरवार ने बताया कि वह अपनी ससुराल रेरुआ कला के भटवा टोला में रहकर खेती करता है। रविवार को पत्नी के साथ हिलौंधा हार में रोपा लगाने गया था। बड़ी बेटी सोमवती (12) और दुर्गा(8) भी साथ थीं। दोनों बच्चियां खेलते-खेलते पास के रमेश मिश्रा के खेत बंधान तक पहुंच गईं।

ग्रामीणों के अनुसार, खेत में एक पुराना बोरवेल था, जो धंसकर गहरा गड्ढा बन गया था। घटनास्थल पर कमर के बराबर पानी है। भारी बारिश के कारण बंद किया गया बोरवेल भी खुल गया था।

नागौद एसडीएम जितेंद्र वर्मा ने बताया- एक बच्ची दुर्गा अभी बोर के अंदर है। बोर असफल होने पर केसिंग निकाल कर बोर यूं ही छोड़ दिया गया था। रेस्क्यू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पूर्व विधायक कल्पना वर्मा, जनपद सीईओ अशोक मिश्रा और टीआई अशोक पांडेय पुलिस बल के साथ मौके पर मौजूद हैं।

संजय गांधी अस्पताल में 19 वर्षीय युवक की मौत पर हंगामा

इलाज में लापरवाही का आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के शासकीय संजय गांधी मेमोरियल अस्पताल में रविवार देर रात उस समय हंगामा मच गया, जब इलाज के दौरान 19 वर्षीय गोपीलाल साकेत की मौत हो गई। मृतक, गुढ थाना क्षेत्र के बदवार निवासी, 8 जुलाई को एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हुआ था। परिजनों ने अस्पताल प्रशासन और डॉक्टरों पर इलाज में लापरवाही का गंभीर आरोप लगाते हुए अस्पताल परिसर में जमकर हंगामा किया।

जानकारी के मुताबिक गोपीलाल साकेत को सड़क हादसे के बाद 8 जुलाई को दोपहर 2 बजे संजय गांधी अस्पताल में भर्ती किया गया था। परिजनों के अनुसार, डॉक्टरों ने बताया कि युवक के सिर में गंभीर चोट है और ऑपरेशन जरूरी है। उसी रात 11.30 बजे ऑपरेशन किया गया, जो सुबह 3 बजे तक चला। ऑपरेशन के बाद डॉक्टरों ने स्थिति सामान्य बताई और जल्द ठीक होने का आश्वासन दिया। हालांकि, परिजनों का कहना है कि इलाज के दौरान जरूरी इंजेक्शन अस्पताल में उपलब्ध नहीं थे, जिसके लिए उन्हें बाहर से इंजेक्शन खरीदना पड़ा।

मृतक की मौसी रूबी साकेत ने आरोप लगाया कि डॉक्टरों ने गलत दवा दी, जिसके कारण गोपीलाल की मौत हुई। उन्होंने बताया कि 9 जुलाई से इंजेक्शन लगाए जा रहे थे, लेकिन डॉक्टरों ने स्थिति को गंभीरता से नहीं लिया। रूबी के अनुसार, रविवार सुबह 4 बजे तक गोपीलाल की हालत स्थिर थी, और उसे दूध, अनार का जूस, और दाल का पानी दिया गया था। लेकिन इसके बाद अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई, और उसकी मौत हो गई। परिजनों का कहना है कि यदि समय पर सही इलाज मिला होता, तो गोपीलाल की जान बच सकती थी।

अस्पताल के डॉक्टर अलक प्रकाश ने बताया कि गोपीलाल को सिर में गंभीर चोट थी, और उसका ऑपरेशन सफलतापूर्वक किया गया था। उन्होंने परिजनों के आरोपों को उनकी मानसिक स्थिति का परिणाम बताया और कहा कि डॉक्टरों ने अपनी ओर से कोई लापरवाही नहीं की।

हंगामे की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और आक्रोशित परिजनों को समझाकर मामला शांत कराया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है, और परिजनों ने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। यह घटना संजय गांधी अस्पताल में चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता पर सवाल उठाती है। परिजनों के गंभीर आरोप और अस्पताल प्रशासन के जवाब के बीच सच्चाई सामने लाने के लिए गहन जांच जरूरी है।

बाढ़ से प्रभावित व्यक्तियों को संवेदनशीलता के साथ क्षतिपूर्ति की करायें व्यवस्था

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा शहर सहित हुजूर अनुभाग के बाढ़ से प्रभावित व्यक्तियों को संवेदनशीलता के साथ उदार भाव से क्षतिपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। उन्होंने राहत राशि के साथ ही अतिरिक्त खाद्यान्न प्रभावितों को उपलब्ध कराने के निर्देश अधिकारियों को दिये। शुक्ल ने सर्किट हाउस रीवा में जल भराव से प्रभावित व्यक्तियों के सर्वे के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली तथा राहत कार्यों के विषय में पूंछतांछ की।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि गत दिवस रीवा शहर के कई वार्डों में जल भराव की स्थिति निर्मित हो गयी थी। उन्होंने स्वयं भी नया तालाब, खैरी आदि मोहल्लों में जाकर जल भराव का जायजा लिया था और पीड़ितों से मुलाकात भी की थी। उन्होंने प्रभावितों को क्षतिपूर्ति की शीघ्र व्यवस्था कराने के निर्देश दिये। शुक्ल ने कहा कि वर्ष 2016 में रीवा में आयी बाढ़ के बाद सर्वे कर बाढ़ को रोकने के उपायों के सुझाव दिये गये थे। उस रिपोर्ट का अध्ययन कर सुझाये गये बिन्दुओं का भी परीक्षण करें। उन्होंने कहा कि करहिया में मूर्ति विसर्जन घाट से आगे नदी की चौड़ाई को बढ़ाने के लिए सर्वे करें साथ ही उन्नत पुलों के बन जाने के बाद पूर्व के पुलों के ढांचे व पिलर आदि को भी हटाने की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। उप मुख्यमंत्री ने गत दिवस जल भराव से उत्पन्न स्थिति में प्रशासन की सक्रियता की प्रशंसा भी की। बैठक में बताया गया कि रीवा शहर के 6 वार्डों के 234 बाढ़ प्रभावितों के प्रकरण सर्वे के उपरांत बनाये गये हैं। इसी प्रकार हुजूर अनुभाग के 410 व्यक्ति बाढ़ से प्रभावित रहें हैं।

कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा कि जल भराव के कारण प्रभावितों को शीघ्र ही राहत राशि व खाद्यान्न की उपलब्धता सुनिश्चित करायी जायेगी। आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवणे ने बताया कि जिन स्थानों में नालों में अतिक्रमण के कारण जल भराव की स्थिति निर्मित हुई उन्हें शीघ्र ही हटाया जायेगा। बैठक में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, अधीक्षण यंत्री विद्युत मंडल बीके शुक्ला, तहसीलदार हुजूर शिवशंकर शुक्ला, पूर्व जिला गौसंवर्धन बोर्ड उपाध्यक्ष राजेश पाण्डेय उपस्थित रहे।

निर्माण कार्यों की समीक्षा आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद 14 जुलाई को सुबह 11 बजे से संभागीय बैठक में विभिन्न विभागों के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। बैठक कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में लोक निर्माण विभाग, पीआईयू तथा मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के कार्यों की समीक्षा की जाएगी। बैठक में अति वर्षा तथा बाढ़ की स्थिति से निपटने की तैयारियों की भी समीक्षा की जाएगी। संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

गुलाब नगर के पास रतहरा मेन रोड डिवाइडर पर मिला अज्ञात युवक का शव

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। थाना समान अंतर्गत गुलाब नगर के पास रतहरा मेन रोड के डिवाइडर पर रविवार को एक अज्ञात युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। मृतक की उम्र लगभग 35 वर्ष बताई जा रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, स्थानीय लोगों ने सुबह शव देखा और तत्काल पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची थाना समान की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। प्रारंभिक जांच में मृतक की पहचान नहीं हो सकी है, और मौत के कारणों का भी अभी पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ शुरू कर दी है और सीसीटीवी फुटेज खंगालने की कोशिश की जा रही है। थाना प्रभारी ने बताया कि मामले की जांच चल रही है और शव की शिनाख्त के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर दहशत का माहौल है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि यदि किसी के पास मृतक की पहचान या घटना से संबंधित कोई जानकारी हो, तो वे तुरंत थाने से संपर्क करें।

औद्योगिक क्षेत्र घूमा के संबंध में सुझाव 20 तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नई औद्योगिक नीति के तहत रीवा जिले में औद्योगिक विकास केन्द्र घूमा का विकास किया जा रहा है। इसमें अधोसंरचना विकास के कार्य पूरे हो गए हैं। नवीन औद्योगिक इकाईयों की स्थापना के लिए भूखण्डों का आवंटन किया जा रहा है। जिला महाप्रबंधक उद्योग जेपी तिवारी ने इस संबंध में कहा है कि इच्छुक व्यक्ति, भूखण्डों की साइज तथा औद्योगिक इकाई के संबंध में अपने सुझाव 20 जुलाई तक दे सकते हैं।

छात्रावास में आठवीं के छात्र ने किया आत्महत्या का प्रयास

वार्डन ने बचाया, सतना जिला अस्पताल में भर्ती; 2 दिन पहले हुआ था एडमिशन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के मुख्तियार गंज स्थित अनुसूचित जनजाति बालक छात्रावास में रविवार दोपहर एक छात्र ने फांसी लगाने का प्रयास किया। गंभीर हालत में 13 वर्षीय छात्र को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज जारी है।

छात्रावास के वार्डन अतुल सिंह सोलंकी ने बताया कि धारकुंडी थाना क्षेत्र के देवरा गांव का रहने वाला छात्र सेंटर प्वाइंट स्कूल में कक्षा आठवीं में पढ़ता है। दो दिन पहले ही उसके परिजन उसका एडमिशन करवा कर छात्रावास में छोड़कर गए थे।

वार्डन सोलंकी ने बताया कि रविवार सुबह से ही छात्र रो रहा था। इस दौरान उसे परिजनों से भी बात कराई गई, लेकिन वह मायूस बना रहा। दोपहर करीब ढाई बजे जब अन्य छात्र हॉल में कैरम खेल रहे थे, तभी उसने तार से गले में फंदा बनाकर फांसी लगाने का प्रयास किया। इस दौरान अन्य छात्रों ने देखा और उन्होंने मौके पर पहुंचकर उसे निकालकर अस्पताल पहुंचाया।

सूचना के बाद कोलगंवा पुलिस ने मामले का संज्ञान लेकर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में खुदकुशी की कोशिश का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस मामले की गहराई से छानबीन कर रही है।

सतना के मुख्तियारगंज स्थित अनुसूचित जनजाति बालक छात्रावास में एक छात्र ने रविवार की दोपहर फांसी लगाने की कोशिश की। देवरा गांव का रहने वाला 13 वर्षीय छात्र सेंटर प्वाइंट स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता है।

छात्रावास के वार्डन अतुल सिंह सोलंकी के अनुसार, परिजन छात्र को दो दिन पहले ही छात्रावास में छोड़कर गए थे। रविवार की सुबह छात्र रो रहा था। वार्डन ने उसकी परिजनों से बात भी कराई। इसके बावजूद वह मायूस था।

दोपहर करीब ढाई बजे जब अन्य छात्र हॉल में कैरम खेल रहे थे, तब उसने तार से फांसी लगाने की कोशिश की। उसे तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उसका इलाज जारी है। कोलगंवा थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। अभी तक इस कदम के पीछे का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।

कमिश्नर 16 जुलाई को करेंगे स्वास्थ्य तथा महिला बाल विकास विभाग की समीक्षा

रीवा. कमिश्नर बीएस जामोद 16 जुलाई को कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में स्वास्थ्य विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक सुबह 11 बजे आरंभ होगी। संबंधित अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

टीएल बैठक आज

रीवा. कलेक्टर प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में 14 जुलाई को सुबह 11 बजे से कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में टीएल बैठक आयोजित की गई है। बैठक में सीएम हेल्पलाइन के आवेदनों के साथ ही आरबीसी के अन्तर्गत राहत एवं सीमांकन से संबंधित लंबित प्रकरणों की समीक्षा की जायेगी। बैठक में एक पेड़ माँ नाम अभियान के तैयारियों की भी समीक्षा की जायेगी।

विभिन्न योजनाओं से लाभांवित हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण किया

धरती आबा योजना से जनजातीय परिवारों का होगा समग्र विकास

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने धरती आबा अभियान के तहत शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभांवित हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण किया। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अत्यंत पिछड़े जनजातीय परिवारों के कल्याण के लिए जनमन योजना शुरू की। प्रधानमंत्री जी ने 2024 में धरती आबा अभियान शुरू करके देश के 28 लाख अनुसूचित जनजाति हितग्राहियों को विकास की सभी योजनाओं का लाभ देने का अभियान शुरू किया है। इसके लिए 28 हजार करोड़ रूपये की राशि दी गयी है। प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में जनजाति परिवारों के कल्याण के लिए इस अभियान को लागू किया गया है। अभियान के तहत रीवा और मऊगंज जिले में 15 जून से 15 जुलाई तक जन जागरूकता शिविर गांव-गांव लगाये जा रहे हैं। इन शिविरों अब तक 2877 जनजाति हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं से लाभांवित किया गया है। धरती आबा योजना से जनजाति परिवारों का समग्र विकास होगा। विकास की कतार में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति को भी योजनाओं का लाभ दिया जायेगा।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि धरती आबा अभियान के तहत जिले भर में जागरूकता का सघन अभियान चलाये। शासन की विभिन्न योजनाओं से जनजाति परिवारों को दिये जा रहे लाभों से अवगत करायें। योजनाओं की जानकारी मिलने पर ही जनजाति परिवार उनका लाभ ले सकेंगे। धरती आबा अभियान में 18 विभागों की 25 योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। हर पात्र जनजाति हितग्राही को इन योजनाओं का लाभ दें। इसमें पक्के आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, खेती के विकास, सामाजिक कल्याण, महिला सशक्तीकरण सहित विभिन्न लाभ शामिल हैं। कार्यक्रम में विधायक मऊगंज प्रदीप पटेल ने कहा कि धरती आबा योजना के तहत लगाये जा रहे शिविरों को अधिक प्रभारी बनायें। जनजाति परिवारों के लिए क्रियान्वित सतत मॉनीटरिंग करें। प्रधानमंत्री जी की मंशा के अनुसार हर पात्र जनजाति हितग्राही को योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ दें। समारोह में अतिथियों का स्वागत प्रभारी उपायुक्त सुदेश मालवीय ने किया। कार्यक्रम में जिला संयोजक कमलेश्वर सिंह ने धरती आबा अभियान के तहत रीवा और मऊगंज जिले में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम में विधायक सिरमौर दिव्यराज सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, जनपद अध्यक्ष गंगेव विकास तिवारी, पुष्पेन्द्र सिंह, अभियान से जुड़े अधिकारी तथा बड़ी संख्या में जनजाति हितग्राही उपस्थित रहे।

मैहर में ऑटो को ट्रक ने मारी टक्कर, एक ही परिवार के 5 लोग घायल

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर में खड़े ऑटो को पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में दो बच्चों समेत 5 लोग घायल हो गए। घटना रविवार रात करीब 8 बजे ह्न 30 पर ग्राम बेरमा स्थित सीमेंट फैक्ट्री के गेट के पास की है।

हादसे में पुरानी बस्ती के मोहम्मद शादाब (32), जुलेखा बी (55), रुबीना बी (30), शोएब (5) और यमन (6) घायल हो गए। ये सभी अपने रिश्तेदार के घर अंमदरा से वापस लौट रहे थे।

स्थानीय लोगों ने घायलों को ऑटो से बाहर निकाला। एक स्थानीय युवक ने अपनी पिकअप से सभी घायलों को मैहर सिविल अस्पताल पहुंचाया।

अस्पताल में डॉक्टर्स ने घायलों का इलाज शुरू किया। परिजनों को सूचना मिलते ही वे भी अस्पताल पहुंच गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर केस दर्ज कर लिया है। फरार ट्रक चालक की तलाश जारी है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।